bdkbZ 37 ?khlk ¼egknoh oekZ½ % okpu vkj fo'ys"k.k

bdkbZ dh :ijs[kk

37.0 उद्देश्य
37.1 प्रस्तावना
37.2 रेखाचित्र का वाचन : घीसा
37.3 रेखाचित्र का सार
37.4 संदर्भ सहित व्याख्या
37.5 अंतर्वस्तु
37.6 मुख्य चरित्र
37.7 परिवेश
37.8 लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति
37.9 संरचना-शिल्प
37.10 प्रतिपाद्य
37.11 सारांश
37.12 शब्दावली
37.13 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

37-0 mís';

यह स्नातक उपाधि के पाठ्यक्रम 'हिंदी गद्य' के छठे खंड की पांचवी इकाई और पाठ्यक्रम की 37वीं इकाई है। इस इकाई में आप महादेवी वर्मा द्वारा रचित रेखाचित्र 'घीसा' का वाचन और विश्लेषण का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- 'घीसा' के वाचन से उसकी अंतर्वस्तु का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे;
- 'घीसा' में आये कठिन शब्दों के अर्थ बता सकेंगे;
- 'घीसा' के प्रमुख अंशों की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकेंगे;
- 'घीसा' की अंतर्वस्तु की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- 'घीसा' में आये प्रमुख चरित्रों की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- 'घीसा' में चित्रित परिवेश की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- 'घीसा' में लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- 'घीसा' का रेखाचित्र की विशेषताओं के संदर्भ में और उसकी भाषा और शैली की विशेषताएँ बता सकेंगे; और
- 'घीसा' के प्रतिपाद्य का विवेचन कर सकेंगे।

37-1 izLrkouk

स्नातक उपाधि कार्यक्रम के हिंदी ऐच्छिक पाठ्यक्रम (बी.एच.डी.ई-101) 'हिन्दी गद्य' के छठे खंड की यह पांचवी इकाई है। इस खंड में आप हिंदी गद्य की कथेतर विधाओं का अध्ययन कर रहे हैं। अब तक आप भारतेंदु हरिश्चंद्र के निबंध 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' और हजारी प्रसाद द्विवेदी के ललित निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' का अध्ययन किया है। अब इस इकाई में आप छायावाद की महान कवयित्री और गद्यकार महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'घीसा' का अध्ययन करेंगे। 'इससे पहले आप खंड-4 में 'घीसा' पर मन्नू भंडारी द्वारा लिखी गयी टेलीविजन पटकथा का अध्ययन कर लिया है। उससे आपको 'घीसा' की अंतर्वस्तु का ज्ञान हो गया होगा। लेकिन इस इकाई में आप महादेवी वर्मा द्वारा लिखे इस रेखाचित्र का अध्ययन करने के बाद आप इस बात को अच्छी तरह से समझ सकेंगे कि कैसे एक रचना और उस पर लिखी गयी पटकथा में क्या अंतर होता है और वह अंतर किन-किन कारणों से होता है। इस इकाई में आप 'घीसा' का अध्ययन करने के साथ-साथ उसके कुछ अंशों की व्याख्या का अध्ययन भी करेंगे। इसके बाद आप रेखाचित्र के रूप में 'घीसा' की विशेषताओं का ज्ञान भी प्राप्त करेंगे। आप 'घीसा' की अंतर्वस्तु, उसके प्रमुख चरित्र, उसमें चित्रित परिवेश, रचना पर

लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव और 'घीसा' की भाषा और शैली की विशेषताओं का अध्ययन भी करेंगे। आप इस रचना के उद्देश्य की भी जानकारी प्राप्त करेंगे। इस अध्ययन से आप यह समझ पायेंगे कि रेखाचित्र के रूप में 'घीसा' का क्या महत्त्व है।

'घीसा' महादेवी वर्मा की रचना है। महादेवी वर्मा (1907-87) को छायावाद की प्रमुख कवयित्री के रूप में तो जाना ही जाता है इसके साथ ही उन्हें श्रेष्ठ गद्यकार के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने रेखाचित्र, संस्मरण और वैचारिक निबंध के क्षेत्र में उल्लेखनीय लेखन किया है। रेखाचित्र और संस्मरण विधा को साहित्यिक उत्कर्षता प्रदान करने में उनका अमूल्य योगदान है। इस इकाई में आप उनके 'घीसा' नामक रेखाचित्र का अध्ययन करने जा रहे हैं जिसमें एक गरीब विधवा स्त्री और उसके छोटे बच्चे घीसा के जीवन संघर्ष, स्वाभिमान और अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में भी हार न मानने का संकल्प अत्यंत मर्मस्पर्शी रूप में पाठकों के समक्ष सजीव हो उठता है। अब आप इस महान कृति का वाचन करें।

37-2 jS[kkfp= dk okpu % ?kh l k

वर्तमान की कौन-सी अज्ञात प्रेरणा हमारे अतीत की किसी भूली हुई कथा को संपूर्ण मार्मिकता के साथ दोहरा जाती है, यह जान लेना सहज होता तो मैं भी आज गाँव के उस efyu सहमे नन्हे-से विद्यार्थी की सहसा याद आ जाने का कारण बता सकती, जो एक छोटी लहर के समान ही मेरे thou-rV को अपनी सारी vkn!rk से छूकर अनन्त tyjkf'k में विलीन हो गया है।

गंगा पार झूँसी के खँडहर और उसके आस-पास के गाँवों के प्रति मेरा जैसा अकारण आकर्षण रहा है, उसे देखकर ही संभवतः लोग जन्म-जन्मांतर के संबंध का व्यंग्य करने लगे हैं। है भी तो आश्चर्य की बात! जिस अवकाश के समय को लोग इष्ट-मित्रों से मिलने, उत्सवों में सम्मिलित होने तथा अन्य आमोद-प्रमोद के लिए सुरक्षित रखते हैं, उसी को मैं इस खँडहर और उसके {kr-fo{kr चरणों पर पछाड़ें खाती हुई HkkxhjFkh के तट पर काट ही नहीं, सुख से काट देती हूँ।

दूर-पास बसे हुए गुड़ियों के बड़े-बड़े ?kjkSnkS के समान लगने वाले कुछ लिपे-पुते, कुछ th.kZ-'kh.kZ घरों से स्त्रियों का झुण्ड पीतल-ताँबे के चमचमाते मिट्‌टी के नये लाल और पुराने HkwnjSx घड़े लेकर गंगाजल भरने आती है, उसे भी मैं पहचान गई हूँ। उनमें कोई बूटेदार लाल, कोई कुछ सफेद और कोई मैल और सूत में v}Sr स्थापित करने वाली, कोई कुछ नई और कोई छेदों से चलनी बनी हुई धोती पहने रहती हैं। किसी की मोम लगी पाटियों के बीच में एक अंगुल चौड़ी सिन्दूर-रेखा अस्त होते हुए सूर्य की किरणों में चमकती रहती है और किसी की कड़वे तेल से भी अपरिचित रूखी जटा बनी हुई छोटी-छोटी लटें मुख को घेर कर उसकी उदासी को और अधिक केंद्रित कर देती हैं। किसी की साँवली गोल कलाई पर शहर की कच्ची नगदार चूड़ियों के नग रह-रहकर हीरे-से चमक जाते हैं और किसी के दुर्बल काले igap पर लाख की पीली मैली चूड़ियाँ काले पत्थर पर मटमैले चन्दन की लकीरें जान पड़ती हैं। कोई अपने fxyV के कड़े-युक्त हाथ घड़े की ओट में छिपाने का प्रयत्न-सा करती रहती है और कोई चाँदी के iNsyh-ddu की झनकार के साथ ही बात करती है। किसी के कान में लाख की पैसे वाली तरकी धोती से कभी-कभी झाँक भर लेती है और किसी की ढारें लंबी जंजीर से गला और गाल एक करती रहती है। किसी के गुदना गुदे गेहुँए पैरों में चाँदी के कड़े सुडौलता की परिधि-सी लगते हैं और किसी की फैली उँगलियों और सफेद एड़ियों के साथ मिली हुई स्याही jkax और काँसे के कड़ों को लोहे की साफ की हुई बेड़ियाँ बना देती है।

वे सब पहले हाथ-मुँह धोती हैं, फिर पानी में कुछ घुसकर घड़ा भर लेती हैं- तब घड़ा किनारे रख, सिर पर bMqjh ठीक करती हुई मेरी ओर देखकर कभी मलिन, कभी उजली, कभी दुःख की व्यथा-भरी, कभी सुख की कथा-भरी मुस्कान से मुस्करा देती हैं। अपने-मेरे बीच का अंतर उन्हें ज्ञात है, तभी कदाचित् वे मुस्कान के सेतु से उसका वार-पार जोड़ना नहीं भूलतीं।

ग्वालों के बालक अपनी चरती हुई गाय-भैंसों में से किसी को उस ओर बहकते देखकर ही ydqVh लेकर दौड़ पड़ते, xMfj;ks के बच्चे अपने झुंड की एक भी बकरी या भेड़ को उस ओर बढ़ते देखकर कान पकड़कर खींच ले जाते हैं और व्यर्थ दिन भर गिल्ली-डंडा खेलनेवाले निठल्ले लड़के भी बीच-बीच में नजर बचाकर मेरा रुख देखना नहीं भूलते।

उस पार शहर में दूध बेचने जाते या लौटते हुए ग्वाले, किले में काम करने जाते या घर आते हुए मजदूर, नाव बाँधते या खोलते हुए मल्लाह, कभी-कभी 'चुनरी त रंगाउब लाल मजीठी हो' गाते-गाते मुझ पर दृष्टि पड़ते ही अचकचा कर चुप हो जाते हैं। कुछ विशेष सभ्य होने का गर्व करनेवालों से मुझे एक सलज्ज नमस्कार भी प्राप्त हो जाता है।

कह नहीं सकती, कब और कैसे मुझे उन बालकों को कुछ सिखाने का ध्यान आया; पर जब बिना dk;dkfj.kh के निर्वाचन के, बिना inkf/kdkfj;k के चुनाव के, बिना भवन के, बिना चंदे की अपील के और सारांश यह है कि बिना किसी चिर-परिचित समारोह के, मेरे विद्यार्थी पीपल के पेड़ की घनी छाया में मेरे चारों ओर एकत्र हो गए, तब मैं बड़ी कठिनाई से गुरु के उपयुक्त गंभीरता का भार वहन कर सकी।

और वे ftKkl कैसे थे सो कैसे बताऊँ! कुछ कानों में बालियाँ और हाथों में कड़े पहने, धुले कुरते और ऊँची धोती में नगर और ग्राम का सम्मिश्रण जान पड़ते थे, कुछ अपने बड़े भाई का पाँव तक लंबा कुरता पहने खेत में डराने के लिए खड़े किए हुए नकली आदमी का स्मरण दिलाते थे, कुछ उभरी पसलियों, बड़े पेट और टेढ़ी दुर्बल टाँगों के कारण अनुमान से ही मनुष्य-संतान की परिभाषा में आ सकते थे और कुछ अपने दुर्बल, रूखे और मलिन मुखों की करुण सौम्यता और fu"iHk पीली आँखों में संसार भर की उपेक्षा बटोर बैठे थे; पर घीसा उनमें अकेला ही रहा और आज भी मेरी स्मृति में अकेला ही आता है।

वह xk/kyh मुझे अब तक नहीं भूली। संध्या के लाल सुनहली आभा वाले उड़ते हुए ndy पर रात्रि ने मानो छिपकर vtu की मूठ चला दी थी। मेरा नाव वाला कुछ चिंतित-सा लहरों की ओर देख रहा था; बूढ़ी भक्तिन मेरी किताबें, कागज-कलम आदि सँभाल कर नाव पर रखकर बढ़ते अंधकार पर खिजलाकर बुदबुदा रही थी या मुझे कुछ सनकी बनाने वाले विधाता पर, यह समझना कठिन था। बेचारी मेरे साथ रहते-रहते दस लंबे वर्ष काट आई है, नौकरानी से अपने-आपको एक प्रकार की vfHkHkkfodk मानने लगी है; परंतु मेरी सनक का दुष्परिणाम सहने के अतिरिक्त उसे क्या मिला है? सहसा ममता से मेरा मन भर आया; परंतु नाव की ओर बढ़ते हुए मेरे पैर, फैलते हुए अंधकार में से एक स्त्री-मूर्ति को अपनी ओर आता देख ठिठक रहे। साँवले, कुछ लंबे-से मुखड़े में पतले स्याह ओठ कुछ अधिक स्पष्ट हो रहे थे। आँखें छोटी पर व्यथा से आर्द्र थीं। मलिन, बिना किनारी की गाढ़े की धोती ने उसके lydkjfgr अंगों को भलीभाँति ढक लिया था; परंतु तब भी शरीर की सुडौलता का आभास मिल रहा था। कंधे पर हाथ रखकर वह जिस दुर्बल अर्धनग्न बालक को अपने पैरों से चिपकाए हुए थी, उसे मैंने संध्या के >ViV में ठीक से नहीं देखा।

स्त्री ने रुक-रुककर कुछ शब्दों और कुछ संकेत में जो कहा, उससे मैं केवल यह समझ सकी कि उसके पति नहीं है, दूसरों के घर लीपने-पोतने का काम करने वह चली जाती है और उसका यह अकेला लड़का ऐसे ही घूमता रहता है। मैं इसे भी और बच्चों के साथ बैठने दिया करूँ, तो यह कुछ तो सीख सके।

दूसरे इतवार को मैंने उसे सबसे पीछे अकेले एक ओर दुबक कर बैठे हुए देखा। पक्का रंग, पर गठन में विशेष सुडौल, मलिन मुख जिसमें दो पीली, पर सचेत आँखें जड़ी-सी जान पड़ती थीं। कस कर बंद किए हुए पतले ओठों की दृढ़ता और सिर पर खड़े हुए छोटे-छेटे रूखे बालों की उग्रता उसके मुख की संकोचभरी कोमलता से विद्रोह कर रही थी। उभरी हड्डियों वाली गर्दन को सँभाले हुए झुके कंधों से रक्तहीन मटमैली हथेलियों और टेढ़े-मेढ़े कटे हुए नाखूनों युक्त हाथों वाली पतली बाँहें ऐसी झूलती थीं, जैसे ड्रामा में विष्णु बनने वाले की दो नकली भुजाएँ। निरंतर दौड़ते रहने के कारण उस लचीले शरीर में दुबले पैर ही विशेष पुष्ट जान पड़ते थे।-बस ऐसा ही था वह, न नाम में कवित्व की गुंजाइश, न शरीर में।

पर उसकी सचेत आँखों में न जाने कौन-सी जिज्ञासा भरी थी। वे निरंतर घड़ी की तरह खुली मेरे मुख पर टिकी ही रहती थीं। मानो मेरी सारी विद्या-बुद्धि को सीख लेना ही उनका ध्येय था।

लड़के उससे कुछ खिंचे-खिंचे से रहते थे। इसलिए नहीं कि वह कोरी था, वरन् इसलिए कि किसी की माँ, किसी की नानी, किसी की बुआ आदि ने घीसा से दूर रहने की नितांत आवश्यकता उन्हें कान पकड-पकड़ कर समझा दी थी।- यह भी उन्होंने बताया और बताया घीसा के सबसे अधिक कुरूप नाम का रहस्य। बाप तो जनम से पहले ही नहीं रहा। घर में

कोई देखने-भालने वाला न होने के कारण माँ उसे बंदरिया के बच्चे के समान चिपकाये फिरती थी। उसे एक ओर लिटाकर जब वह मजदूरी के काम में लग जाती थी, तब पेट के बल घसीट-घसीट कर बालक संसार के प्रथम अनुभव के साथ-साथ इस नाम की योग्यता भी प्राप्त करता जाता था।

फिर धीरे-धीरे अन्य स्त्रियाँ भी मुझे आते-जाते रोककर अनेक प्रकार की भाव-भंगिमा के साथ एक विचित्र सांकेतिक भाषा में घीसा की जन्म-जात अयोग्यता का परिचय देने लगीं। क्रमशः मैंने उसके नाम के अतिरिक्त और कुछ भी जाना।

उसका बाप था तो कोरी, पर बड़ा ही अभिमानी और भला आदमी बनने का इच्छुक। Mfy;k आदि बुनने का काम छोड़ कर वह थोड़ी बढ़ईगीरी सीख आया और केवल इतना ही नहीं, एक दिन चुपचाप दूसरे गाँव से युवती वधू लाकर उसेने अपने गाँव की सब सजातीय सुंदरी बालिकाओं को उपेक्षित और उनके योग्य माता-पिता को निराश कर डाला। मनुष्य इतना अन्याय सह सकता है; परंतु ऐसे अवसर पर भगवान् की vlfg".krk प्रसिद्ध ही है। इसी से जब गाँव के चौखट-किवाड़ बनाकर और ठाकुरों के घरों में सफेदी करके उसने कुछ ठाट-बाट से रहना आरंभ किया, तब अचानक हैजे के बहाने वह वहाँ बुला लिया गया, जहाँ न जाने का बहाना न उसकी बुद्धि सोच सकी, न अभिमान। पर स्त्री भी कम गर्वीली न निकली। गाँव के अनेक विधुर और अविवाहित कोरियों ने केवल उदारवश ही उसकी नैया पार लगाने का उत्तरदायित्व लेना चाहा; परंतु उसने केवल कोरा उत्तर नही नहीं दिया, iR;qr उसे नमक-मिर्च लगाकर rhr भी कर दिया। कहा- 'हम सिंघ के egjk: होइके का सियारन के जाब।' फिर बिना स्वर-ताल के आँसू गिराकर, बाल खोलकर, चूड़ियाँ फोड़कर और बिना किनारे की धोती पहनकर जब उसने बड़े घर की विधवा का स्वाँग भरना आरंभ किया, तब तो सारा समाज {kkHk के समुद्र में डूबने-उतराने लगा। उस पर घीसा बाप के मरने के बाद हुआ है। हुआ तो वास्तव में छः महीने बाद, परंतु उस समय के संबंध में क्या कहा जाय, जिसका कभी एक क्षण वर्ष-सा बीतता है कभी एक वर्ष एक क्षण हो जाता है। इसी से यदि छः मास का समय रबर की तरह खिंचकर एक साल की अवधि तक पहुच गया, तो इसमें गाँव वालों का क्या दोष!

यह कथा अनेक {kidke; विस्तार के साथ सुनाई तो गई थी मेरा मन फेरने के लिए और मन फिरा भी, परंतु किसी सनातन नियम से कथावाचक की ओर न फिरकर कथा के नायकों की ओर फिर गया और इस प्रकार घीसा मेरे और अधिक निकट आ गया। वह अपना जीवन संबंधी viokn कदाचित् पूरा नहीं समझ पाया था; परंतु अधूरे का भी प्रभाव उस पर कम न था, क्योंकि वह सबको अपनी छाया से इस प्रकार बचाता रहता था, मानो उसे कोई छूत की बीमारी हो।

पढ़ने, उसे सबसे पहले समझने, उसे व्यवहार के समय स्मरण रखने, पुस्तक में एक भी धब्बा न लगाने, स्लेट को चमचमाती रखने ओर अपने छोटे-से-छोटे काम का उत्तरदायित्व बड़ी गंभीरता से निभाने में उसके समान कोई चतुर न था। इसी से कभी-कभी मन चाहता था कि उसकी माँ से उसे माँग ले जाऊँ और अपने पास रख कर उसके विकास की उचित व्यवस्था कर दूँ-परंतु उस उपेक्षिता, पर ekfuuh विधवा का वही एक सहारा था। वह अपने पति का स्थान छोड़ने पर प्रस्तुत न होगी, यह भी मेरा मन जानता था और उस बालक के बिना उसकी जीवन कितना दुर्वह हो सकता है, यह भी मुझसे छिपा न था। फिर नौ साल के कर्त्तव्यपरायण घीसा की गुरु-भक्ति देखकर उसकी मातृ-भक्ति के संबंध में कुछ संदेह करने का स्थान ही नहीं रह जाता था और इस तरह घीसा वहीं और उन्हीं कठोर परिस्थितियों में रहा, जहाँ क्रूरतम नियति ने केवल अपने मनोविनोद के लिए ही उसे रख दिया था।

शनिश्चर के दिन ही वह अपने छोटे दुर्बल हाथों से पीपल की छाया को गोबर-मिट्टी से पीला चिकनापन दे आता था। फिर इतवार को माँ के मज़दूरी पर जाते ही एक मैले, फटे कपड़े में बँधी मोटी रोटी और कुछ नमक या थोड़ा चबेना और एक डली गुड़ बगल में दबाकर, पीपल की छाया को एकबार फिर झाड़ने-बुहारने के पश्चात् वह गंगा के तट पर आ बैठता और अपनी पीली सतेज आँखों पर क्षीण साँवले हाथ की छाया कर दूर-दूर तक दृष्टि को दौड़ाता रहता। जैसे ही उसे मेरी नीली सफेद नाव की झलक दिखाई पड़ती, वैसे ही वह अपनी पतली टाँगों पर तीर के समान उड़ता और बिना नाम लिए हुए ही साथियों को सुनाने के लिए गुरु साहब कहता हुआ फिर पेड़ के नीचे पहुँच जाता, जहाँ न जाने कितनी बार दुहराये-तिहराये हुए

कार्यक्रम की एक अंतिम vkofYk आवश्यक हो उठती। पेड़ की नीची डाल पर रखी हुई मेरी 'khrykikVh उतार कर बार-बार झाड़ पोंछकर बिछाई जाती, कभी काम न आने वाली सूखी स्याही से काली कच्चे काँच की दावात, टूटे निब और उखड़े हुए रंगवाले भूरे, हरे कलम के साथ पेड़ के dkVj से निकालकर यथास्थान रख दी जाती और तब इस विचित्र पाठशाला का विचित्र मंत्री और निराला विद्यार्थी कुछ आगे बढ़कर मेरे सप्रणाम स्वागत के लिए प्रस्तुत हो जाता।

महीने में चार दिन ही मैं वहाँ पहुँच सकती थी और कभी-कभी काम की अधिकता से एक-आध छुट्टी का दिन ओर भी निकल जाता था; पर उस थोड़े से समय और इने-गिने दिनों में भी मुझे उस बालक के हृदय का जैसा परिचय मिला, वह चित्र के एल्बम के समान निरन्तर नवीन-सा लगता है।

मुझे आज भी वह दिन नहीं भूलता जब मैंने बिना कपड़ों का प्रबंध किए हुए ही इन बेचारों को सफाई का महत्त्व समझाते-समझाते थका डालने की मूर्खता की। दूसरे इतवार को सब जैसे-कै-तैसे ही सामने थे– केवल कुछ गंगाजी में मुँह इस तरह धो आए थे कि मैल अनेक रेखाओं में विभक्त हो गया था, कुछ के हाथ-पाँव ऐसे घिसे थे कि शेष मलिन शरीर के साथ वे अलग जोड़े हुए से लगते थे और कुछ 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी' की कहावत चरितार्थ करने के लिए कीट-से मैले फटे कुरते घर ही छोड़कर ऐसे vfLFkiatje; रूप में आ उपस्थित हुए थे, जिसमें उनके प्राण, 'रहने का आश्चर्य है, गए अचंभा कौन' की घोषणा करते जान पड़ते थे; पर घीसा गायब था। पूछने पर लड़के काना-फूसी करने को या एक साथ सभी उसकी अनुपस्थिति का कारण सुनाने को आतुर होने लगे। एक-एक शब्द जोड़-तोड़कर समझना पड़ा कि घीसा माँ से कपड़ा धोने के साबुन के लिए तभी से कह रहा था—माँ को मजदूरी के पैसे मिले नहीं और दुकानदार ने नाज लेकर साबुन दिया नहीं। कल रात को माँ को पैसे मिले और आज सवेरे वह सब काम छोड़ कर पहले साबुन लेने गई। अभी लौटी है, अतः घीसा कपड़े धो रहा है, क्योंकि गुरु साहब ने कहा था कि नहा-धोकर साफ कपड़े पहन कर आना। और अभागे के पास कपड़े ही क्या थे। किसी दयावती का दिया हुआ एक पुराना कुरता, जिसकी एक आस्तीन आधी थी और एक अँगोछा-जैसा फटा टुकड़ा। जब घीसा नहाकर गीला अँगोछा लपेटे और आधा भीगा कुरता पहने अपराधी के समान मेरे सामने आ खड़ा हुआ, तब आँखें ही नहीं मेरा रोम-रोम गीला हो गया। उस समय समझ में आया कि nks.kkpk;Z ने अपने Hkhy f'k"; से अँगूठा कैसे कटवा दिया था।

एक दिन न जाने क्या सोच कर मैं उन विद्यार्थियों के लिए 5-6 सेर जलेबियाँ ले गई; पर कुछ तोलनेवाले की सफाई से, कुछ तुलवाने वाले की समझदारी से और कुछ वहाँ की छीना-झपटी के कारण प्रत्येक को पाँच से अधिक न मिल सकीं। एक कहता था– मुझे एक कम मिली; दूसरे ने बताया– मेरी अमुक ने छीन ली। तीसरे को घर में सोते हुए छोटे भाई के लिए चाहिए, चौथे को किसी और की याद आ गई। पर इस कोलाहल में अपने हिस्से की जलेबियाँ लेकर घीसा कहाँ खिसक गया, यह कोई न जान सका। एक नटखट अपने साथी से कह रहा था-'सार एक ठो पिलवा पाले है, ओही का देय बरे गा होई' पर मेरी दृष्टि से संकुचित होकर चुप रह गया और तब तक घीसा लौटा ही। उसका सब हिसाब ठीक था-जलखई वाले छन्ने में दो जलेबियाँ लपेट कर वह माई के लिए छप्पर में खोंस आया है, एक उसने अपने पाले हुए, बिना माँ के कुत्ते के पिल्ले को खिला दी और दो स्वयं खा लीं। 'और चाहिए' पूछने पर उसकी संकोच भरी आँखें झुक गई-ओठ कुछ हिले। पता चला कि पिल्ले को उससे कम मिली है। दें तो गुरु साहब पिल्ले को ही एक और दे दें।

और होली के पहले की एक घटना तो मेरी स्मृति में ऐस गहरे रंगों से अंकित है, जिसका धुल सकना सहज नहीं। उन दिनों हिंदू-मुस्लिम oSeuL; धीरे-धीरे बढ़ रहा था और किसी दिन उसके चरम सीमा तक पहुँच जाने की पूर्ण संभावना थी। घीसा दो सप्ताह से ज्वर में पड़ा था- दवा मैं भिजवा देती थी; परंतु देखभाल का कोई ठीक प्रबंध न हो पाता था। दो-चार दिन उसकी माँ स्वयं बैठी रही। फिर एक अंधी बुढ़िया को बैठाकर काम पर जाने लगी।

इतवार की साँझ को मैं बच्चों को विदा दे, घीसा को देखने चली, परंतु पीपल के पचास पग दूर पहुँचते-पहुँचते उसी को डगमगाते पैरों से गिरते-पड़ते अपनी ओर आते देख, मेरा मन उद्विग्न हो उठा। वह तो इधर पन्द्रह दिन से उठा ही नहीं था। अतः मुझे उसके lfUuikrxLr

होने का ही संदेह हुआ। उसके सूखे शरीर में तरल विद्युत-सी दौड़ रही थी, आँखें और भी सतेज और मुख ऐसा था, जैसी हल्की आँच में धीरे-धीरे लाल होने वाला लोहे का टुकड़ा।

पर उसके okr-xzLr होने से भी अधिक चिंताजनक उसकी समझदारी की कहानी निकली। वह प्यास से जाग गया था; पर पानी पास मिला नहीं और मनियाँ की अँधी vk¡th से माँगना ठीक न समझकर वह चुपचाप कष्ट सहने लगा। इतने में मुल्लू के कक्का ने पार से लौटकर दरवाजे से ही अंधी को बताया कि शहर में दंगा हो रहा है और तब उसे गुरु साहब का ध्यान आया। मुल्लू के कक्का के हटते ही वह ऐसे हौले-हौले उठा कि बुढ़िया को पता ही न चला और कभी दीवार, कभी पेड़ का सहारा लेता-लेता इस ओर भागा। अब वह गुरु साहब के गोड़ धर कर यहीं पड़ा रहेगा; पर पार किसी तरह भी न जाने देगा।

तब मेरी समस्या और भी जटिल हो गई। पार तो मुझे पहुँचना था ही; पर साथ ही बीमार घीसा को ऐसे समझाकर, जिससे उसकी स्थिति और गंभीर न हो जाए। पर सदा के संकोची, नम्र और आज्ञाकारी घीसा का इस दृढ़ और हठी बालक में पता ही न चलता था। उसने पारसाल ऐसे ही अवसर पर grkgr दो मल्लाह देखे थे और कदाचित् इस समय उसका रोग से विकृत मस्तिष्क उन चित्रों में गहरा रंग भर कर मेरी उलझन को और उलझा रहा था। पर उसे समझाने का प्रयत्न करते-करते अचानक ही मैंने एक ऐसा तार छू दिया, जिसका स्वर मेरे लिए भी नया था। यह सुनते ही कि मेरे पास रेल में बैठकर दूर-दूर से आए हुए बहुत से विद्यार्थी हैं जो अपनी माँ के पास साल भर में एक बार ही पहुँच पाते हैं और जो मेरे न जाने से अकेले घबरा जाएँगे, घीसा का सारा हठ, सारा विरोध ऐसे बह गया जैसे वह कभी था ही नहीं।– और तब घीसा के समान तर्क की क्षमता किसमें थी! जो साँझ को अपनी माई के पास नहीं जा सकते, उनके पास गुरु साहब को जाना ही चाहिए। घीसा रोकेगा, तो उसके भगवान् जी गुस्सा हो जाएँगे, क्योंकि वे ही तो घीसा को अकेला बेकार घूमता देखकर गुरु साहब को भेज देते हैं, आदि-आदि उसके तर्कों का स्मरण कर आज भी मन भर आता है। परंतु उस दिन मुझे आपत्ति से बचाने के लिए अपने बुखार से जलते हुए अशक्त शरीर को घसीट लाने वाले घीसा को जब उसकी टूटी खटिया पर लिटा कर मैं लौटी, तब मेरे मन में कौतूहल की मात्रा ही अधिक थी।

इसके उपरांत घीसा अच्छा हो गया और धूल और सूखी पत्तियों को बाँध कर उन्मत्त के समान घूमने वाली गर्मी की हवा से उसका रोज संग्राम छिड़ने लगा–झाड़ते-झाड़ते ही वह पाठशाला धूल-धूसरित होकर भूरे, पीले और कुछ हरे पत्तों की चादर में छिप कर तथा ddky'k"kh शाखाओं में उलझते, सूखे पत्तों को पुकारते वायु की संतप्त सरसर से मुखरित होकर उस भ्रान्त बालक को चिढ़ाने लगती। तब मैंने तीसरे पहर से संध्या समय तक वहाँ रहने का निश्चय किया; परंतु पता चला घीसा किसकिसाती आँखों को मलता और पुस्तक से बार-बार धूल झाड़ता हुआ दिन भर वहीं पेड़ के नीचे बैठा रहता है, मानो वह किसी प्राचीन युग का rikori vuU;xfjd czgepkjh हो, जिसकी तपस्या भंग के लिए ही लू के झोंके आते हैं।

इस प्रकार चलते-चलते समय ने जब दाईं छूने के लिए दौड़े हुए बालक के समान झपट कर उस दिन पर उँगली धर दी, जब मुझे उन लोगों को छोड़ जाना था, तब तो मेरा मन बहुत ही अस्थिर हो उठा। कुछ बालक उदास थे और कुछ खेलने की छुट्टी से प्रसन्न! कुछ जानना चाहते थे कि छुट्टियों के दिन चूने की fVifd;k¡ रखकर गिने जाएँ, या कोयले की लकीरें खींचकर। कुछ के सामने बरसात में चूते हुए घर में आठ पृष्ठ की पुस्तक बचा रखने का प्रश्न था और कुछ कागजों पर चूहों के आक्रमण की ही समस्या का समाधान चाहते थे। ऐसे महत्त्वपूर्ण कोलाहल में घीसा न जाने कैसे अपना रहना अनावश्यक समझ लेता था, अतः सदा के समान आज भी मैं उसे न खोज पाई। जब मैं कुछ चिंतित-सी वहाँ से चली, तब मन भारी-भारी हो रहा था, आँखों में कोहरा-सा घिर-घिर आता था। वास्तव में उन दिनों डाक्टरों को मेरे पेट में फोड़ा होने का संदेह हो रहा था– ऑपरेशन की संभावना थी। कब लौटूँगी या नहीं लौटूँगी, यही सोचते-सोचते मैंने फिर कर चारों ओर जो आर्द्र दृष्टि डाली, वह कुछ समय तक उन परिचित स्थानों को भेंट कर वहीं उलझ रही ।

पृथ्वी के mPNokl के समान उठते हुए धुँधलेपन में वे कच्चे पर आकंठ मग्न हो गए थे-केवल फूस के मटमैले और खपरैल के कत्थई और काले छप्पर, वर्षा में बढ़ी गंगा के मिट्टी जैसे जल में पुरानी नावों के समान जान पड़ते थे। dNkj की बालू में दूर तक फैले तरबूज और खरबूजे

के खेत अपनी सिर की और फूस के मुट्ठियों, टट्टियों और रखवाली के लिए बनी i.kdqfV;k के कारण जल में बसे किसी vkfne द्वीप का स्मरण दिलाते थे। उनमें एक-दो दीए जल चुके थे, तब मैंने दूर पर एक छोटा-सा काला धब्बा आगे बढ़ता देखा। वह घीसा ही होगा। यह मैंने दूर से ही जान लिया। आज गुरु साहब को उसे विदा देना है, यह उसका नन्हा हृदय अपनी पूरी संवेदना-शक्ति से जान रहा था, इसमें संदेह नहीं था। परंतु उस उपेक्षित बालक के मन में मेरे लिए कितनी सरल ममता और मेरे विछोह की कितनी गहरी व्यथा हो सकती है, यह जानना मेरे लिए शेष था।

निकट आने पर देखा कि उस धूमिल गोधूली में बादामी कागज़ पर काले चित्र के समान लगने वाला नंगे बदन घीसा एक बड़ा तरबूज दोनों हाथों में सम्हाले था, जिसमें बीच के कुछ कटे भाग में से भीतर की b'kr-y{; ललाई चारों ओर के गहरे हरेपन में कुछ बंद गुलाबी फूल-जैसी जान पड़ती थी।

घीसा के पास न पैसा था न खेत– तब क्या वह इसे चुरा लाया है! मन का संदेह बाहर आया ही और तब मैंने जाना कि जीवन का खरा सोना छिपाने के लिए उस मलिन शरीर को बनाने वाला ईश्वर उस बूढ़े आदमी से भिन्न नहीं, जो अपनी सोने की मोहर को कच्ची मिट्टी की दीवार में रखकर निश्चिंत हो जाता है। घीसा गुरु साहब से झूठ बोलना भगवान जी से झूठ बोलना समझता है। यह तरबूज कई दिन पहले देख आया था। माई के लौटने में जाने क्यों देर हो गई, तब उसे अकेले ही खेत पर जाना पड़ा। वहाँ खेत वाले का लड़का था, जिसकी उसके नए कुरते पर बहुत दिन से नज़र थी। प्रायः सुना-सुना कर कहता था कि जिनकी भूख झूठी पत्तल से बुझ सकती है, उनके लिए परोसा लगाने वाले पागल होते हैं। उसने कहा– पैसा नहीं है, तो कुरता दे जाओ। और घीसा आज तरबूज न लेता, तो कल उसका क्या करता। इससे कुरता दे आया; पर गुरु साहब को चिंता करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि गर्मी में वह कुरता पहनता ही नहीं और आने-जाने के लिए पुराना ठीक रहेगा। तरबूज सफेद न हो, इसलिए कटवाना पड़ा–मीठा है या नहीं यह देखने के लिए, उँगली से कुछ निकाल भी लेना पड़ा।

गुरु साहब न लें, तो घीसा रात भर रोएगा-छुट्टी भर रोएगा। ले जायें तो वह रोज नहा-धोकर पेड़ के नीचे पढ़ा हुआ पाठ दोहराता रहेगा और छुट्टी के बाद पूरी किताब पट्टी पर लिखकर दिखा सकेगा।

और तब अपने स्नेह में प्रगल्भ उस बालक के सिर पर हाथ रखकर मैं Hkkokfrjsd से ही निश्चय हो रही। उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं; परंतु उस nf{k.kk के सामने संसार में अब तक सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।

फिर घीसा के सुख का विशेष प्रबंध कर मैं बाहर चली गई और लौटते-लौटते कई महीने लग गए। इस बीच में उसका कोई समाचार न मिलना ही संभव था। जब फिर उस ओर जाने का मुझे अवकाश मिल सका, तब घीसा को उसके भगवान जी ने सदा के लिए पढ़ने से अवकाश दे दिया था– आज वह कहानी दोहराने की मुझमें शक्ति नहीं है; पर संभव है आज के कल, कल के कुछ दिन, दिनों के मास और मास के वर्ष बन जाने पर मैं nk'kfud के समान धीर-भाव से उस छोटे जीवन का उपेक्षित अंत बता सकूँगी। अभी मेरे लिए इतना ही पर्याप्त है कि मैं अन्य मलिन मुखों में उसकी छाया ढूँढ़ती रहूँ।

37-3 js[kkfp= dk lkj

'घीसा' महादेवी वर्मा द्वारा लिखित अत्यंत मर्मस्पर्शी रेखाचित्र है। महादेवी गंगा पार झूँसी के खंडहर और उसके आसपास के गाँवों के प्रति अपने आकर्षण के कारण वहां जब भी समय मिलता था, घूमने जाया करती थी। उन गाँवों में घूमते हुए उनका ध्यान इस बात की ओर गया कि वहां के निर्धन बच्चों को पढ़ाना चाहिए। सप्ताह में एक दिन वह गंगा पार बच्चों को पढ़ाने लगीं। उन्हीं बच्चों में घीसा भी था। घीसा एक विधवा स्त्री का बेटा था जिसका पति घीसा के पैदा होने से छह महीने पहले ही हैजे से मर गया था। घीसा की मां लोगों के घर पर लीपने-पोतने का काम करके अपने और अपने बेटे का गुजारा करती थी। घीसा का नाम घीसा इसलिए पड़ा कि पिता के न होने और घर में कोई देखभाल करने वाला न होने के कारण घीसा

की मां काम पर घीसा को भी साथ ले जाती थी और वहां वह जमीन पर पेट के बल घसिट-घसिट कर अपनी मां के आसपास घूमता रहता था। इसीसे उसका नाम घीसा पड़ गया था। अपने पिता की मृत्यु के छह महीने बाद पैदा होने के कारण और विधवा होने के बावजूद दुबारा शादी न करने के कारण घीसा की मां और घीसा के बारे में तरह-तरह की बातें कही जाती थीं जिसका आशय यह था कि महादेवी वर्मा को घीसा जैसे बच्चे को अपनी पाठशाला में नहीं पढ़ाना चाहिए। गाँव वालों के विरोध के बावजूद घीसा महादेवी वर्मा की पाठशाला में पढ़ने लगा। अपने बच्चों को पढ़ाने की इच्छा घीसा की मां में थी और पढ़ने की इच्छा घीसा में भी थी। महादेवी जी पढ़ाने के लिए महीने में चार दिन ही मुश्किल से निकाल पाती थी। लेकिन इन चार दिनों में ही पढ़ाई के प्रति घीसा के लगाव, उसकी सादगी और अपने गुरु के प्रति उसकी भक्ति को महादेवी जी ने पहचान लिया था। गुरु द्वारा कही गयी प्रत्येक बात उसके लिए ऐसा आदेश थी जिसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता था। महादेवी वर्मा इस रेखाचित्र में ऐसी कई घटनाओं का उल्लेख करती हैं जिनसे घीसा के चरित्र के उज्ज्वल पक्ष उभरकर सामने आते हैं। जब पाठशाला से अवकाश लेकर महादेवी वर्मा कुछ महीने के लिए जा रही होती है तो घीसा उन्हें भेंट देने के लिए तरबूज लेकर आता है और उस तरबूज को हासिल करने के लिए वह अपना नया कुर्ता तक दे देता है, यह जानकर महादेवी द्रवित हो जाती है। लेकिन जब महादेवी कुछ महीनों बाद लौटती है तो उन्हें मालूम पड़ता है कि घीसा अब इस दुनिया में नहीं है।

37-4 lnHkZ lfgr 0;k[;k

महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'घीसा' नामक रेखाचित्र का आपने अध्ययन कर लिया है। अब हम इसके कुछ महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या करेंगे। महादेवी जी के इस रेखाचित्र की वैसे तो एक-एक पंक्ति महत्त्वपूर्ण है लेकिन फिर भी कुछ अंश विशेष महत्त्व के हैं।

1) *वर्तमान की कौन-सी अज्ञात प्रेरणा हमारे अतीत की किसी भूली हुई कथा को संपूर्ण मार्मिकता के साथ दोहरा जाती है, यह जान लेना सहज होता तो मैं भी आज गाँव के उस मलिन सहमे नन्हे-से विद्यार्थी की सहसा याद आ जाने का कारण बता सकती, जो एक छोटी लहर के समान ही मेरे जीवन-तट को अपनी सारी आर्द्रता से छूकर अनन्त जलराशि में विलीन हो गया है।*

lnHkZ% उपर्युक्त पंक्तियां महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'घीसा' में से लिया गया है। यह रेखाचित्र उक्त पंक्तियों के साथ ही आरंभ होता है और जिस घीसा के बारे में रेखाचित्र में वर्णन किया गया है उस के बारे में बताने से पहले महादेवी वर्मा लिखने की अपनी प्रेरणा का कारण उक्त पंक्तियों में बताती हैं।

0;k[;k% महादेवी वर्मा को अचानक गाँव के एक नन्हे से विद्यार्थी की याद आ जाती है जो गंगा पार झूंसी के खंडहरों के पास के एक छोटे से गाँव का रहने वाला था और जिससे उनकी मुलाकात उस पाठशाला में हुई थी जो महादेवी वर्मा ने उस गाँव के एक पेड़ के नीचे शुरू की थी। इस घीसा नामक विद्यार्थी की याद उन्हें अचानक कैसे आ गयी इस बात का कोई ठोस कारण समझ न पाने के कारण वह उसकी याद को वर्तमान की अज्ञात प्रेरणा मानती है। महादेवी जी घीसा की याद 'मलिन सहमे नन्हे-से विद्यार्थी' के रूप में करती है। मलिन इसलिए कि वह गरीब है, सहमा इसलिए कि आज तक वह किसी पाठशाला में पढ़ने के लिए नहीं गया है इसलिए डरा हुआ है और उम्र में तो बहुत छोटा है ही। लेकिन उसकी स्मृति मार्मिकता से भरी है जिसे हम रेखाचित्र पढ़ने से जान पाते हैं। उस नन्हे बच्चे को वह उस छोटी सी लहर की तरह याद करती है जो समुद्र से निकल कर किनारे से टकराकर हमेशा हमेशा के लिए समुद्र में ही विलीन हो जाती है। घीसा भी उनके लिए उस लहर की तरह है जिसने उनके जीवन रूपी तट को अपनी संवेदनशीलता से छूकर इस विश्व के महासमुद्र में विलीन हो गया है। इसी घीसा की कहानी वे रेखाचित्र के माध्यम से कहती हैं।

fo'k"k% 1) महादेवी वर्मा लिखित 'घीसा' नामक यह रेखाचित्र एक विधवा मां और उसके बच्चे की मर्मस्पर्शी कथा है। घीसा नामक वह बालक कैसे थोड़े ही दिनों में अपने व्यवहार से लेखिका को प्रभावित कर पाता है इसका बहुत ही संवेदनशील चित्र इस रेखाचित्र में खींचा गया है।

2) महादेवी वर्मा कवयित्री हैं इसलिए गद्य में भी वह कविता जैसी भाषा लिखती हैं।

मसलन, उनका यह कथन 'जो एक छोटी लहर के समान ही मेरे जीवन-तट को अपनी सारी आर्द्रता से छूकर अनन्त जलराशि में विलीन हो गया है' काव्य की भाषा के नजदीक है।

3) भाषा तत्सम प्रधान है लेकिन उसमें निहित संवेदनशीलता गहरे रूप में प्रभावित करती है।

अब हम कुछ अंशों का यहां उद्धृत कर रहे हैं जिनकी व्याख्या इकाई पढ़कर स्वयं करने का प्रयास करें।

vH;kl

1) *कह नहीं सकती, कब और कैसे मुझे उन बालकों को कुछ सिखाने का ध्यान आया; पर जब बिना कार्यकारिणी के निर्वाचन के, बिना पदाधिकारियों के चुनाव के, बिना भवन के, बिना चंदे की अपील के और सारांश यह है कि बिना किसी चिर-परिचित समारोह के, मेरे विद्यार्थी पीपल के पेड़ की घनी छाया में मेरे चारों ओर एकत्र हो गए, तब मैं बड़ी कठिनाई से गुरु के उपयुक्त गंभीरता का भार वहन कर सकी।*

....

....

....

....

....

2) *तब अपने स्नेह में प्रगल्भ उस बालक के सिर पर हाथ रखकर मैं भावातिरेक से ही निश्चल हो रही। उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं; परंतु उस दक्षिणा के सामने संसार में अब तक सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।*

....

....

....

....

....

....

37-5 vrolLr

महादेवी वर्मा द्वारा लिखे गये रेखाचित्र उन साधारण लोगों की असाधारण कहानियां कहते हैं जो अभावों के बीच जीते हुए, तरह-तरह के कष्ट उठाते हुए और अत्यंत विपरीत परिस्थितियों के बीच भी अपने अंदर की मनुष्यता से एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में उभरते हैं जो महान से महान व्यक्तियों की महानता से कमतर नहीं है। 'घीसा' भी एक ऐसा ही रेखाचित्र है जिसका केंद्रीय चरित्र घीसा और उसकी विधवा मां का जीवन संघर्ष और उस संघर्ष के बीच भी अपने आत्मसम्मान और अपने मनुष्यत्व को बनाए रखने की उनकी कोशिश ही इस रेखाचित्र को अविस्मरणीय बना देती है।

इस रेखाचित्र के केंद्र में घीसा है और महादेवी ने उसी का अत्यंत मर्मस्पर्शी और संवेदनशील शब्दचित्र निर्मित किया है। यह है तो रेखाचित्र लेकिन इसे कहानी की तरह गढ़ा गया है। रेखाचित्र को तीन भागों में बांटकर देखा जा सकता है। रेखाचित्र का पहला भाग वह है जब महादेवी जी झूंसी के खंडहरों के पास के एक गाँव में एक पेड़ के नीचे गाँव के बच्चों को पढ़ाने का निर्णय लेती है और उस पाठशाला में पढ़ने के लिए घीसा अपनी मां के साथ आता है। घीसा एक पिछड़ी जाति (कोरी) की विधवा स्त्री का बेटा है और अपने पिता की मृत्यु के छह माह बाद पैदा होने के कारण उसकी मां के चरित्र को लेकर अनर्गल बातें गाँव में व्याप्त हैं। महादेवी पर भी यह दबाव है कि घीसा को स्कूल में भर्ती न किया जाए लेकिन गाँव वालों की परवाह किए बिना महादेवी घीसा को स्कूल में भर्ती कर लेती है।

रेखाचित्र का दूसरा भाग स्कूल में पढ़ते हुए घीसा के व्यवहार के बारे में है। इस भाग में घीसा

का पढ़ाई के प्रति समर्पण, गुरु के प्रति गहरा भक्तिभाव और उसकी निश्छल संवेदनशीलता उभरकर आती है। यहां महादेवी जी ने छोटे-छोटे लेकिन मार्मिक प्रसंगों के द्वारा घीसा के व्यक्तित्व को उभारने की कोशिश की है। घीसा की मां एक मामूली मजदूर स्त्री है जो दूसरों के घर पर लिपाई-पोताई का काम कर अपना और अपने बेटे का जीवन यापन करती है। घीसा द्वारा स्कूल के आंगन को साफ करना, साफ-सफाई का आदेश मिलने पर धुले हुए गीले कपड़े पहन के आ जाना। गुरु द्वारा जलेबी मिलने पर उसे अपनी मां और अपने कुत्ते के बीच बराबर बांटने की कोशिश करना, यह जानकर कि शहर में दंगा फैल गया है, अपनी बीमारी की अवस्था में भी गुरु जी को गाँव में ही रोकने की कोशिश करना और यह जानकर कि शहर में भी बहुत से बच्चे उनके आसरे पर है, उनको जाने देना आदि कई प्रसंगों के माध्यम से घीसा के जीवन के कई पहलू सामने आते हैं। उसकी विनम्रता, उसकी आज्ञाकारिता और उसकी दृढ़ता। उसके व्यक्तित्व की इन्हीं विशेषताओं की वजह से धीरे-धीरे महादेवी वर्मा के मन में घीसा जगह बना लेता है।

रेखाचित्र का तीसरा और अंतिम भाग महादेवी वर्मा का गाँव से विदा लेना है। अपनी बीमारी की वजह से महादेवी जी को लंबे समय तक स्कूल बंद रखना है और इसकी सूचना वह बच्चों को दे देती है। कुछ बच्चे उदास हो जाते हैं तो कुछ छुट्टी की बात से प्रसन्न हो जाते हैं। छुट्टियों के दिन में किताबों को संभालकर रखना, छुट्टी के दिनों को गिनना और कई तरह की समस्याएं बच्चे अपनी गुरु के सामने रखते हैं। लेकिन इस पूरी चर्चा में घीसा पाठशाला से गायब हो जाता है और जब महादेवी जी घर जाने के लिए नदी के तट पर पहुंचती है तो उनको शाम के धुंधलके में घीसा नंगे बदन आता दिखायी देता है। उसके हाथ में बड़ा सा तरबूज है जो वह अपनी गुरु को विदा स्वरूप भेंट करने के लिए लाया है। तरबूज को देखकर अचानक महादेवी वर्मा के मन में संदेह होता है कि कहीं घीसा इसे किसी के खेत से चुराकर तो नहीं लाया है। घीसा बताता है कि यह तरबूज वह अपने नये कुरते के बदले में लाया है जिस पर खेत की रखवाली करने वाले बच्चे की बहुत दिनों से नज़र थी। महादेवी को वह यह भी बताता है कि अब गर्मी के दिन आने वाले हैं और गर्मियों में वह कुरता नहीं पहनता इसलिए उसकी उसे कोई जरूरत नहीं थी। वह यह भी कहता है कि गुरु से झूठ बोलना भगवान से झूठ बोलना है। यह भेंट ही यह बताने के लिए पर्याप्त है कि गुरुजी का विछोह घीसा के लिए बहुत बड़ी व्यथा है और इससे गुरु के प्रति गहरी श्रद्धा और प्रेम का भी प्रमाण मिलता है। महादेवी कहती है कि इतनी मूल्यवान भेंट आज तक किसी शिष्य ने अपने गुरु को नहीं दी होगी। महादेवी दुखी मन से गाँव से और घीसा से विदा लेती है। कुछ महीनों बाद जब वह वापस लौटती है तो पाती है कि घीसा को भगवान ने पढ़ने से सदा सदा के लिए छुट्टी देकर अपने पास बुला लिया है। इस प्रकार घीसा महादेवी के जीवन से सदा-सदा के लिए विदा हो जाता है।

'घीसा' है तो एक रेखचित्र लेकिन कथारस से सराबोर। महादेवी वर्मा के अन्य रेखाचित्रों की तरह यहां भी एक अत्यंत साधारण जीवन से आये पात्र को जिसके घर, परिवार और जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे असाधारण कहा जा सके, अपनी रचना के केंद्र में रखती हैं। उस साधारण से प्रतीत होते जीवन के ऐसे मार्मिक प्रसंगों को वे अपनी रचना में उद्घाटित करती चलती हैं कि वह असाधारणता से चमक उठता है। घीसा के जीवन के साथ भी यही होता है। एक बहुत ही गरीब ग्रामीण विधवा स्त्री जो निम्न जाति (कोरी) की भी है और जिसके प्रति गाँव में न किसी की सहानुभूति है और न ही दयाभाव। वह स्त्री हर तरह के कष्ट उठाकर अपने और अपनी एकमात्र संतान घीसा का मेहनत मजूरी करते हुए पालन-पोषण करती है। उस स्त्री की इच्छा है कि उसकी संतान कुछ पढ़ लिख जाए लेकिन गाँव में पढ़ाने की कोई व्यवस्था नहीं है और ऐसे में महादेवी वर्मा पहुंचती है और बच्चों को पढ़ाने का निश्चय करती है। घीसा की मां भी घीसा को लेकर पहुंचती है लेकिन गाँव के लोग नहीं चाहते कि घीसा उनके बच्चों के साथ पढ़े। उनके अनुसार घीसा एक बदचलन स्त्री का बेटा है और ऐसे बच्चे के साथ पढ़ने से उनके बच्चों पर भी बुरा असर पड़ेगा। घीसा की मां की बदचलनी का सबूत यह था कि घीसा का जन्म अपने पिता की मृत्यु होने के छह माह बाद हुआ था। दूसरा सबूत यह था कि जाति-बिरादरी के कायदे के अनुसार घीसा की मां को पुनर्विवाह कर लेना चाहिए था लेकिन वह शादी के ऐसे इच्छुकों को लौटा चुकी थी क्योंकि स्वयं उसके अनुसार वह एक शेर की बीबी थी अब किसी सियार के साथ कैसे बंध सकती है। इन दो बातों ने घीसा और

उसकी मां को गाँव वालों के लिए अछूत बना दिया था और उसके चरित्र को लेकर तरह-तरह की बातें की जाती थीं। यहां तक कि उसे काम के लिए दूसरे गाँवों में जाना पड़ता था। लेकिन वह स्वाभिमानी स्त्री न झुकने के लिए तैयार हुई और न दबने के लिए।

घीसा ऐसी माता का बेटा था और उसे अपनी मां के कष्टों, घर के अभावों का ज्ञान था। इसलिए उसमें विनम्रता और दृढ़ता एक साथ थी। उसमें एक सहज, स्वाभाविक विनम्रता थी लेकिन जरूरत पड़ने पर वह पूरी दृढ़ता के साथ अपनी बात पर कायम रह सकता था। दंगों के दौरान गुरु जी को शहर नहीं जाना चाहिए क्योंकि इसमें खतरा है। पिछले साल दंगों में दो मल्लाहों के साथ हुई दुर्घटना उसे अब भी याद थी इसलिए वह नहीं चाहता था कि गुरु जी जान जोखिम में डालकर शहर जाएँ। अपनी इस बात से उसे डिगाना लगभग नामुमकिन था लेकिन जब गुरु जी ने उसे बताया कि शहर में भी घीसा जैसे बहुत से बच्चे अपने मां-बाप से दूर उनके आसरे पर रहते हैं और ऐसे वक्त अगर वह उनके पास नहीं हुई तो क्या यह ठीक होगा। इस बात को सुनकर घीसा की सारी दृढ़ता क्षण भर में गायब हो जाती है। वह जानता है कि उन बच्चों को अभी गुरु जी की जरूरत है और उन्हें यहां रोकना किसी भी तरह उचित नहीं है। ऐसे कई प्रसंग घीसा के व्यक्तित्व को साधारणता से असाधारणता में रूपांतरित करते चलते हैं।

रेखाचित्र का अंतिम प्रसंग एक तरह से घीसा के प्रेम, त्याग और गुरुभक्ति का अन्यतम उदाहरण है जब घीसा अपनी गुरु जी को विदाई के समय भेंट के रूप में देने के लिए अपना नया कुरता देकर उसके बदले में तरबूज लेकर आता है। महादेवी जानती थी कि घीसा की मां की हैसियत ऐसी नहीं है कि वह तरबूज खरीद सके इसलिए उन्हें लगता है कि कहीं घीसा किसी के खेत से तो चुराकर नहीं लाया है। लेकिन जब उन्हें वास्तविकता मालूम पड़ती है तो वह अंदर तक हिल जाती है। उस समय की अपनी मनःस्थिति को इन शब्दों में बयान करती हैं, *"और तब अपने स्नेह से प्रगल्भ उस बालक के सिर पर हाथ रखकर मैं भावातिरेक से ही निश्चल हो रही। उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं। परंतु उस दक्षिणा के सामने संसार में अब तक सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।"*

लेकिन इस अंत का चरम उस अंतिम परिच्छेद में है जब कुछ महीनों बाद महादेवी जी उस गाँव में लौटती हैं तो उन्हें मालूम पड़ता है कि घीसा की मौत हो चुकी है। लेखिका यह तो नहीं बताती कि उसकी मृत्यु कैसे हुई। यह बताने लायक साहस वह अपने में नहीं पाती लेकिन उसका संकेत इस रूप में देती हैं कि *"उस छोटे जीवन का उपेक्षित अंत"* कैसे हुआ वह कभी भविष्य में बता पाएगी। छोटे जीवन के उपेक्षित अंत से स्पष्ट है कि गरीबी और सामाजिक उपेक्षा ने ही अंततः घीसा की जान ली होगी जिसे स्वयं महादेवी वर्मा ने घीसा और उसकी मां के जीवन में देखा था और जिसके कई चित्र उन्होंने रेखाचित्र में अंकित किये हैं।

रेखाचित्र में संस्मरण और कहानी दोनों की विशेषताएं निहित होती है। इस रेखाचित्र में भी हम इन दोनों विशेषताओं को देख सकते हैं। यह कहानी की तरह काल्पनिक कथानक पर आधारित नहीं है वरन महादेवी जी के जीवन में आए सचमुच के लोगों से संबंधित रचना है। घीसा कोई काल्पनिक पात्र नहीं है और न ही वह गाँव जहां जाकर महादेवी वर्मा ने कुछ अवधि तक गरीब बच्चों को पढ़ाया था। घीसा उन्हीं में से एक था। लेकिन इस संस्मरण को उन्होंने संस्मरण की तरह नहीं बल्कि कहानी की तरह लिखा है। कहानी की तरह इसमें भी हम कथावस्तु का आरंभ, विकास और अंत देख सकते हैं। इस रेखाचित्र में घीसा के जीवन के बारे में जो जानकारी दी गयी है उतने तक ही रचनाकार ने अपने को सीमित रखा है। वह अनावश्यक विस्तार में नहीं गया है और न ही बाद में क्या हुआ उसे बताया है जबकि संस्मरण के तौर पर वह इसे बता सकती थी लेकिन तब रचना का प्रभाव कम हो सकता था। अपने वर्तमान रूप में 'घीसा' एक अविस्मरणीय रेखाचित्र बन गया है और उसका पात्र घीसा एक अविस्मरणीय पात्र।

cks/k iz'u

1. रेखाचित्र 'घीसा' में किन-किन विधाओं की विशेषताएं दिखायी देती हैं?
   क) कहानी की
   ख) कविता की

ग) संस्मरण की
घ) कहानी और संस्मरण की ( )

2. घीसा के गाँव में महादेवी वर्मा क्या कार्य आरंभ करती है?
क) बच्चों को पढ़ाना
ख) औरतों को कढ़ाई का काम सिखाना
ग) गाँव वालों को कहानियां सुनाना
घ) धर्मोपदेश देना ( )

3. गाँव वाले घीसा के पाठशाला में पढ़ने का विरोध क्यों करते हैं?

.....

4. घीसा महादेवी वर्मा को विदाई के समय क्या भेंट देता है?

.....

37-6 e[; pfj=

'घीसा' में बहुत अधिक पात्र नहीं है। रेखाचित्र के केंद्र में स्वयं रचनाकार महादेवी वर्मा हैं जो घीसा के बारे में पाठकों को बता रही हैं। महादेवी वर्मा के साथ उनकी नौकरानी भक्तिन जो अब स्वयं महादेवी जी के शब्दों में नौकरानी से अधिक उनकी अभिभाविका हो गयी है। उसके बाद गाँव के लोग और बच्चे लेकिन इनमें से किसी का चरित्र स्वतंत्र रूप से नहीं उभरता सिर्फ घीसा और उसकी मां का ही चरित्र हमारे सामने आता है। पूरा रेखाचित्र घीसा पर केंद्रित है और उसके व्यक्तित्व की विशेषताएं ही हमारे सामने विस्तार से उभर कर आती हैं। घीसा के मां का चित्र भी कुछ हद तक उभरता है जो किसी न किसी रूप में घीसा के जीवन और चरित्र को उभारने में सहायक बनता है। जहां तक लेखिका का सवाल है वह स्वयं इस रेखाचित्र में मौजूद हैं। उन्हीं के माध्यम से घीसा और गाँव का पूरा चित्र हमारे सामने आता है। वे ही गाँव में स्कूल खोलने का निर्णय लेती हैं। गाँव वालों के विरोध के बावजूद घीसा को अपनी पाठशाला में पढ़ने की अनुमति देती हैं और उन्हीं के लिए घीसा बहुत कुछ ऐसे काम करता है जिससे घीसा के चरित्र के कई पहलू उजागर होते हैं। लेकिन रेखाचित्र का उद्देश्य सिर्फ घीसा के चरित्र को उभारना है इसलिए यहां हम घीसा के चरित्र पर ही विचार करेंगे।

घीसा से महादेवी की पहली मुलाकात उस दिन नदी के किनारे सांझ के समय होती है जब वह गाँव में पाठशाला खोलने का निर्णय ले चुकी है और गाँव के छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाना शुरू दिया है। उस दिन लौटते हुए नदी के किनारे उसे घीसा अपनी मां के साथ पहली बार महादेवी जी से मिलता है लेकिन उस दिन महादेवी जी घीसा पर पूरा ध्यान नहीं दे पाती। लेकिन जब अगली बार घीसा पाठशाला में उपस्थित होता है तब उनका ध्यान घीसा की तरफ जाता है। उस समय वह घीसा का चित्र कुछ इन शब्दों में बयान करती हैं:

"पक्का रंग, पर गठन में विशेष सुडौल, मलिन मुख जिसमें दो पीली, पर सचेत आँखें जड़ी-सी जान पड़ती थीं। कस कर बंद किए हुए पतले ओठों की दृढ़ता और सिर पर खड़े हुए छोटे-छोटे रूखे बालों की उग्रता उसके मुख की संकोचभरी कोमलता से विद्रोह कर रही थी। उभरी हड्डियों वाली गर्दन को सँभाले हुए झुके कंधों से रक्तहीन मटमैली हथेलियों और टेढ़े-मेढ़े कटे हुए नाखूनों युक्त हाथों वाली पतली बाँहें ऐसी झूलती थीं, जैसे ड्रामा में विष्णु बनने वाले की दो नकली भुजाएँ। निरंतर दौड़ते रहने के कारण उस लचीले शरीर में दुबले पैर ही विशेष पुष्ट जान पड़ते थे।– बस ऐसा ही था वह, न नाम में कवित्व की गुंजाइश, न शरीर में।" स्पष्ट है कि एक गरीब मजदूरनी का नौ साल का बेटा घीसा अपने नाम के अनुरूप दिखने में बहुत साधारण था। उसमें कोई बाह्य सौंदर्य नहीं था और न ही उसकी पारिवारिक स्थिति ऐसी थी कि वह अपने को सज-धजकर रख सके। यही वजह है कि महादेवी जी का कहना था कि न नाम में और न शरीर में कोई कवित्व दिखायी देता था। लेकिन यही साधारण शरीर और उतना ही साधारण नाम वाले बालक की आँखों में महादेवी जी को एक विशेष जिज्ञासा भाव दिखायी देता है जैसे वह अपने गुरू की समस्त विद्या-बुद्धि को आँखों-आँखों से ही सीख लेना चाहता है। यानी घीसा का व्यक्तित्व भले ही अत्यंत साधारण हो लेकिन उसकी आँखों में वह भाव थे जो एक विद्यार्थी में होने चाहिए। धीरे-धीरे महादेवी जी के मनोमस्तिष्क पर वह छाता चला जाता

है।

महादेवी के आकर्षण का पहला कारण घीसा के जीवन की वह पूर्वकथा है जिसे गाँव वालों ने घीसा की माँ को बदनाम करने के लिए सुनाई थी। यानी कि घीसा का जन्म पिता की मौत के बाद हुआ। कहने की यह कोशिश की जा रही थी कि घीसा एक नाजायज बच्चा है जबकि सच्चाई यह थी कि वह अपने पिता की मृत्यु के छह महीने बाद पैदा हुआ था। चूंकि घीसा के पिता छोटी जाति (कोरी) के थे और इस वजह से घीसा की मां को विधवा की तरह जीवनयापन करने की बजाए किसी दूसरे से शादी कर लेनी चाहिए थी, लेकिन वह ऐसा नहीं करती। यह भी एक कारण था गाँव वालों के नाराज होने का। शायद उन्होंने इसमें अपना अपमान समझा हो। जो भी हो, लेकिन इसी वजह से घीसा की मां को पूरे गाँव के विरोध का सामना करना पड़ रहा था और काम के लिए भी उसे दूसरे गाँवों में जाना पड़ता था। अपने जीवन के बारे में फैली हुई बातों के बारे में तो घीसा अभी समझ सकने की स्थिति में नहीं था लेकिन अपने प्रति लोगों के अप्रिय रवैये को समझने की क्षमता उसमें थी और यही वजह थी कि स्वयं घीसा अपने को दूसरों से दूर ही रखता था। ऐसे कष्टों के बीच घीसा को उसकी मां ने पाला-पोसा था और यही वजह थी कि महादेवी जी का घीसा के प्रति सहज ही लगाव पैदा हो गया था।

घीसा में पढ़ाई के प्रति सच्ची लगन थी। स्वयं महादेवी पाठशाला में उसके व्यवहार के बारे में टिप्पणी करते हुए लिखती हैं, *"पढ़ने, उसे सबसे पहले समझने, उसे व्यवहार के समय स्मरण रखने, पुस्तक में एक भी धब्बा न लगाने, स्लेट को चमचमाती रखने ओर अपने छोटे-से-छोटे काम को उत्तरदायित्व बड़ी गंभीरता से निभाने में उसके समान कोई चतुर न था"*। उसकी इसी लगन को देखकर महादेवी वर्मा में यह विचार भी उठा था कि वह इस बच्चे को अपने साथ शहर ले जाए और उसके पढ़ने-लिखने की समुचित व्यवस्था कर दे। लेकिन एक विधवा माँ के इकलौते बच्चे को ले जाकर उसकी माँ के जीवन को और कष्टप्रद नहीं बनाना चाहती थी।

घीसा के लिए पढ़ाई का अर्थ केवल पढ़ाई नहीं था। वह उस जगह को जहां पाठशाला लगती थी उसे साफ-सुथरा रखता था। पाठशाला रविवार को लगती थी और वह शनिवार को ही पाठशाला की जगह लीप-पोतकर तैयार कर देता था। फिर रविवार के दिन गंगा किनारे पहुंचकर वह अपनी गुरु जी का इंतजार करता था और जब दूर से उनकी नाव दिखायी देने लगती थी तो वह दौड़कर अन्य विद्यार्थियों को इसकी सूचना देता था। घीसा के लिए गुरु जी की आज्ञा सबसे बढ़कर थी। जब गुरु जी ने बिना यह सोचे-विचारे कि इन गरीब विद्यार्थियों के लिए नहा-धोकर साफ-सुथरे कपड़े पहन कर आने का क्या मतलब है, उन्होंने उन बच्चों को सफाई से आने के लिए कह दिया था। बच्चे आए लेकिन आधे-अधूरे ढंग से सफाई करके। कोई गंगा में हाथ-मुँह धोकर आ गया था और कुछ मैले कपड़े घर पर ही छोड़कर नंगा ही कक्षा में चला आया था। लेकिन घीसा नहीं आया। दूसरे बच्चों ने बताया कि वह अपनी मां से पिछले सप्ताह से ही साबुन लाने के लिए कह रहा था। मां को मजदूरी कल ही मिली इसलिए साबुन आज ही खरीदा जा सका है और वह अपने कपड़े धो रहा है। थोड़ी देर में घीसा धुला हुआ भीगा कुरता पहने और गीला अंगोछा लपेटे महादेवी जी के सामने आ खड़ा हुआ। गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिए घीसा की यह लगन देखकर महादेवी जी का *"रोम-रोम गीला हो गया"*।

घीसा का बहुत छोटा सा संसार था जिसमें उसकी मां और वह पिल्ला था जो उसके साथ घुलमिल गया था और घीसा जिसे अपने घर का सदस्य ही समझता था। उसे मिलने वाली हर चीज वह अपनी माँ और उस पिल्ले में जरूर बांटता था। एकबार जब महादेवी जी बच्चों के लिए पांच-छह सेर जलेबी लेकर आई और बच्चों के बीच पांच-पांच के हिसाब से बंटी तो घीसा के हिस्से में भी पाँच ही आयी थी। उसमें से दो उसने अपने लिए, दो अपनी मां के लिए और एक पिल्ले के लिए रख ली। जबकि सब बच्चे और जलेबी की मांग कर रहे थे लेकिन घीसा ने ऐसा कोई आग्रह नहीं किया। लेकिन जब स्वयं महादेवी जी ने उससे पूछा तो बड़ी मुश्किल से उसके मुँह से यह निकला पिल्ले को उससे कम मिली है इसलिए "दें तो गुरु साहब पिल्ले को ही एक ओर दे दें"।

घीसा में अपने गुरु साहब के प्रति कितनी गहरी श्रद्धा थी इसका प्रमाण उस घटना से मिलता है जब अपनी बीमारी के दौरान घीसा को मालूम पड़ता है कि शहर में दंगा हो गया है, तो वह चल सकने की हालत में न होते हुए भी वह गुरु जी को रोकने के लिए घर से निकल पड़ता है और उनके पैरों में पड़कर प्रार्थना करता है कि जब तक दंगा खत्म न हो तब तक वह शहर न जाए। महादेवी जी घीसा की यह जिद्द देखकर असमंजस में पड़ जाती है। घीसा अपनी गुरु जी को तभी जाने देता है जब उसे मालूम पड़ता है कि शहर में उसकी तरह और भी बहुत से बच्चे हैं जो अपने माता-पिता से दूर गुरु जी के सहारे पर हैं। विनम्र, संकोची और आज्ञाकारी घीसा अचानक हठी बन गया था। लेकिन जैसे ही उन बच्चों के बारे में उसे बताया गया जो अपने माता-पिता से दूर गुरु जी के सहारे थे, तो उसका सारा हठ और दृढ़ता काफूर हो गयी थी।

घीसा के व्यक्तित्व का एक और पहलू उस समय सामने आता है जब लंबे समय के लिए महादेवी वर्मा उन बच्चों से विदा लेकर जाने वाली है। घीसा अपना अकेला नया कुरता गुरु जी को भेंट में देने के लिए तरबूज खरीदने के वास्ते दे आता है। पहले महादेवी जी को संदेह होता है कि कहीं घीसा तरबूज चुराके तो नहीं लाया है लेकिन जब उन्हें सारी घटना मालूम पडती है तो इन शब्दों में वह अपने मन के भाव व्यक्त करती है, *"तब अपने स्नेह में प्रगल्भ उस बालक के सिर पर हाथ रखकर मैं भावातिरेक से ही निश्चल हो रही। उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं; परंतु उस दक्षिणा के सामने संसार में अब तक सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।"* गरीबी और सामाजिक बहिष्कार और अपमान झेलते हुए भी जिस तरह घीसा में संकोच, विनम्रता, दृढ़ता, त्याग, आज्ञाकारिता, सेवाभाव, परोपकारिता आदि मानवीय गुण भरे थे, इन्हीं से उसका व्यक्तित्व दूसरों बच्चों से अलग और विशिष्ट बना था। लेकिन घीसा अपनी जिंदगी की लड़ाई हार गया। महादेवी यह तो नहीं बताती कि घीसा की मृत्यु कैसे हुई लेकिन उसकी मृत्यु उसके जीवन की चरम त्रासदी ही रही होगी।

Ckk/k i'u

5. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता घीसा में नहीं है।
   क) विनम्रता
   ख) दृढ़ता
   ग) दिखावा
   घ) आज्ञाकारिता ( )
6. शहर में दंगे के समय अपनी गुरु जी को रोकने की घीसा की कोशिश उसके चरित्र की किस विशेषता को दर्शाता है?

   .....

   .....

   .....

37-7 ifjo'k

'घीसा' में इलाहाबाद के पास गंगा पार झूंसी के खंडहरों के आसपास के गाँवों का परिवेश चित्रित हुआ है। स्वयं महादेवी जी ने इस रेखाचित्र के आरंभ में ही कहा है कि झूंसी के खंडहरों और उसके आसपास गाँवों के प्रति उनका विशेष आकर्षण रहा है। इसी आकर्षण के चलते वह उस क्षेत्र में जाती रहती थी और ऐसी ही एक यात्रा के दौरान उनके मन में यह विचार आया कि क्यों न यहां के गरीब बच्चों को पढ़ाया जाए। इस रेखाचित्र के केंद्र में तो घीसा ही है लेकिन महादेवी जी ने उस गाँव का भी चित्र प्रस्तुत किया है जहां उन्होंने अपनी रविवारीय पाठशाला आरंभ की थी। गंगा किनारे बसे गाँव का छोटा-सा चित्र उन्होंने इन शब्दों में व्यक्त किया है, *"दूर-पास बसे हुए गुड़ियों के बड़े-बड़े घरौंदों के समान लगने वाले कुछ लिपे-पुते, कुछ जीर्ण-शीर्ण घरों से स्त्रियों का झुण्ड पीतल-ताँबे के चमचमाते मिट्टी के नये लाल और पुराने भदरंग घड़े लेकर गंगाजल भरने आती है"*। इसके बाद वह उन ग्रामीण स्त्रियों के सौंदर्य का वर्णन करती हैं जो समूह में गंगा किनारे पानी भरने जाती हैं, *"उनमें कोई बूटेदार लाल, कोई कुछ सफेद और कोई मैल और सूत में अद्वैत स्थापित करने वाली, कोई कुछ नई और कोई*

छेदों से चलनी बनी हुई धोती पहने रहती हैं। किसी की मोम लगी पाटियों के बीच में एक अंगुल चौड़ी सिन्दूर-रेखा अस्त होते हुए सूर्य की किरणों में चमकती रहती है और किसी की कड़वे तेल से भी अपरिचित रूखी जटा बनी हुई छोटी-छोटी लटें मुख को घेर कर उसकी उदासी को और अधिक केंद्रित कर देती हैं। किसी की साँवली गोल कलाई पर शहर की कच्ची नगदार चूड़ियों के नग रह-रहकर हीरे-से चमक जाते हैं और किसी के दुर्बल काले पहुँचे पर लाख की पीली मैली चूड़ियाँ काले पत्थर पर मटमैले चन्दन की लकीरें जान पड़ती हैं। कोई अपने गिलट के कड़े-युक्त हाथ घड़े की ओट में छिपाने का प्रयत्न-सा करती रहती है और कोई चाँदी के पछेली-ककना की झनकार के साथ ही बात करती है। किसी के कान में लाख की पैसे वाली तरकी धोती से कभी-कभी झाँक भर लेती है और किसी की ढारें लंबी जंजीर से गला और गाल एक करती रहती है। किसी के गुदना गुदे गेहुँए पैरों में चाँदी के कड़े सुडौलता की परिधि-सी लगते हैं और किसी की फैली उँगलियों और सफेद एड़ियों के साथ मिली हुई स्याही राँगे और काँसे के कड़ों को लोहे की साफ की हुई बेड़ियाँ बना देती है।" ग्रामीण स्त्रियों के इस चित्रण में महादेवी जी ने उनकी गरीबी और दुख का चित्र खींचा है तो दूसरी ओर उन्हीं मे से कुछ जो अपेक्षाकृत संपन्न और सुखी नज़र आती हैं उनका समानांतर चित्र खींचकर गाँव के यथार्थ को उसकी पूर्णता में प्रस्तुत किया है। महादेवी जी ने आगे गाँव के बच्चों और पुरुषों के भी चित्र प्रस्तुत किये हैं। बच्चों का वर्णन वे कुछ इन शब्दों में करती हैं, *"ग्वालों के बालक अपनी चरती हुई गाय-भैंसों में से किसी को उस ओर बहकते देखकर ही लकुटी लेकर दौड़ पड़ते, गड़रियों के बच्चे अपने झुंड की एक भी बकरी या भेड़ को उस ओर बढ़ते देखकर कान पकड़कर खींच ले जाते हैं और व्यर्थ दिन भर गिल्ली-डंडा खेलनेवाले निठल्ले लड़के भी बीच-बीच में नजर बचाकर मेरा रुख देखना नहीं भूलते।"* ऐसे ही शहर में जाकर अपना दूध बेचने वाले, किले में काम करने वाले और मल्लाहों का चित्र भी उन्होंने प्रस्तुत किया है, *"उस पार शहर में दूध बेचने जाते या लौटते हुए ग्वाले, किले में काम करने जाते या घर आते हुए मजदूर, नाव बाँधते या खोलते हुए मल्लाह, कभी-कभी 'चुनरी त रंगाउब लाल मजीठी हो' गाते-गाते मुझ पर दृष्टि पड़ते ही अचकचा कर चुप हो जाते हैं। कुछ विशेष सभ्य होने का गर्व करनेवालों से मुझे एक सलज्ज नमस्कार भी प्राप्त हो जाता है।"*

गंगा पार के इन गाँव की औरतों, बच्चों और पुरुषों के ये चित्र महादेवी ने तटस्थ भाव से नहीं चित्रित किये हैं। उन सबके चित्र उन्होंने उस समय के पेश किये हैं जब वे उनकी आँखों के सामने से गुजर रहे थे। एक शहरी और शिक्षित स्त्री को देखकर उन पर क्या प्रतिक्रिया होती है, उसका वर्णन भी महादेवी ने प्रस्तुत किया है। मसलन, गंगा किनारे पानी भरने जाने वाली औरतें जब महादेवी को देखती हैं तो वे कुछ इस तरह प्रतिक्रिया करती हैं, *"वे सब पहले हाथ-मुँह धोती हैं, फिर पानी में कुछ घुसकर घड़ा भर लेती हैं– तब घड़ा किनारे रख, सिर पर इंडुरी ठीक करती हुई मेरी ओर देखकर कभी मलिन, कभी उजली, कभी दुःख की व्यथा-भरी, कभी सुख की कथा-भरी मुस्कान से मुस्करा देती हैं। अपने-मेरे बीच का अंतर उन्हें ज्ञात है, तभी कदाचित् वे मुस्कान के सेतु से उसका वार-पार जोड़ना नहीं भूलतीं।"* ठीक इसी तरह लोकगीत गाता हुआ जाने वाला व्यक्ति महादेवी को देखकर अचकचाकर चुप जाता है और जिन्हें शहरी अभिवादन का तरीका मालूम है वे एक सलज्ज नमस्कार भी करते हैं। बच्चे महादेवी जी की तरफ कनखियों से देखते हैं। इस तरह महादेवी के लिए परिवेश का अर्थ वहां के घर और झोंपड़े ही नहीं है वे लोग भी हैं जो गाँवों में रहते हैं। उनके जो विविधतापूर्ण चित्र निर्मित किये हैं उनसे मालूम पड़ता है कि महादेवी जी परिवेश को उसकी पूरी जीवंतता और गतिशीलता में चित्रित करती हैं।

जब वह गाँव के बच्चों को पढ़ाने का निर्णय लेती है तो उनके पास कोई साधन नहीं होता। एक पेड़ की घनी छाया में ही वह अपनी पाठशाला आरंभ कर देती हैं। पाठशाला में बच्चे आने शुरू हो जाते हैं। जब पहले दिन बच्चे पाठशाला में पहुंचते हैं तो महादेवी उन बच्चों का चित्र कुछ इस तरह प्रस्तुत करती हैं, *"और वे जिज्ञासु कैसे थे सो कैसे बताऊँ! कुछ कानों में बालियाँ और हाथों में कड़े पहने, धुले कुरते और ऊँची धोती में नगर और ग्राम का सम्मिश्रण जान पड़ते थे, कुछ अपने बड़े भाई का पाँव तक लंबा कुरता पहने खेत में डराने के लिए खड़े किए हुए नकली आदमी का स्मरण दिलाते थे, कुछ उभरी पसलियों, बड़े पेट और टेढ़ी दुर्बल टाँगों के कारण अनुमान से ही मनुष्य-संतान की परिभाषा में आ सकते थे और कुछ अपने दुर्बल, रूखे और मलिन मुखों की करुण सौम्यता और निष्प्रभ पीली आँखों में संसार भर की उपेक्षा बटोर बैठे थे"।* यहां भी महादेवी वर्मा गाँव में गरीबी और अशिक्षा के गहरे प्रभाव को देखती हैं। यही

कारण है कि उन बच्चों का दुबला पतला शरीर, पहनने योग्य कपड़ों का अभाव और साफ-सफाई रखने के लिए जरूरी साधनों की कमी के कारण जिस रूप में वे बच्चे महादेवी जी के सामने उपस्थित हुए थे उसका सजीव चित्र उन्होंने प्रस्तुत किया है। रेखाचित्र में आगे भी बच्चों के ऐसे कई सामूहिक चित्र अलग-अलग प्रसंगों में प्रस्तुत किये हैं।

महादेवी जी ने प्रकृति के भी कई सुंदर चित्र निर्मित किये हैं। वैसे तो हर तरह के चित्रों में उनकी काव्य प्रतिभा अभिव्यक्त हुई है लेकिन प्रकृति के चित्रण में इसे विशेष रूप से देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, संध्या का यह वर्णन, *"संध्या के लाल सुनहली आभा वाले उड़ते हुए दुकूल पर रात्रि ने मानो छिपकर अंजन की मूठ चला दी थी।"* इस तरह प्रकृति के छोटे-बड़े कई चित्र इस रेखाचित्र में बीच-बीच में आते हैं। महादेवी ने घीसा पर केंद्रित अपने रेखाचित्र में घीसा के आसपास की पूरी दुनिया का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। न केवल प्रकृति और गाँव का बल्कि वहां रहने वाले स्त्री-पुरुष और बच्चों का भी। परिवेश के इस चित्र ने इस रेखाचित्र का सौंदर्य और अधिक बढ़ा दिया है।

37-8 y[kdh; 0;fDrRo dh vfHk0;fDr

इस रेखाचित्र का केंद्रीय चरित्र हमारे सामने इसकी लेखिका महादेवी वर्मा के माध्यम से सामने आता है। रेखाचित्र में लेखक जिस व्यक्ति का भी शब्द चित्र प्रस्तुत करता है, वह उसके जीवनानुभव का हिस्सा होता है। भले ही वह जीवन में बहुत थोड़ी ही अवधि के लिए क्यों न आया हो। घीसा भी ऐसा ही चरित्र है जो महादेवी जी के जीवन के एक खास दौर में उनके सामने उपस्थित हुआ था और थोड़े समय रहकर वह सदा-सदा के लिए नज़रों से ओझल हो गया था। लेकिन उसकी स्मृति महादेवी के लिए चिरस्थायी हो गयी थी। महादेवी जी इस रेखाचित्र को संस्मरण के रूप में प्रस्तुत करती हैं इसलिए पूरी रचना में वह स्वयं उपस्थित रहती हैं। एक तटस्थ द्रष्टा के रूप में नहीं बल्कि सक्रिय पात्र के रूप में। इसलिए यह बहुत स्वाभाविक है कि महादेवी जी के व्यक्तित्व की कई विशेषताएं हमारे सामने उभर कर आती हैं।

महादेवी जी रेखाचित्र में अपने बारे में कुछ-कुछ बताती चलती हैं। मसलन, सबसे पहले हमें यह जानकारी मिलती है कि उन्हें गंगा के किनारे झूंसी के खंडहरों और उसके आसपास के गाँवों में घूमने के प्रति विशेष आकर्षण है। लेकिन उनका यह घूमना पर्यटकों के घूमना जैसा नहीं है। गाँव का जैसा सजीव चित्र वे प्रस्तुत करती हैं उससे यह ज्ञात हो जाता है कि उनकी गहरी रुचि मानव समाज में है। लोगों के सुख-दुख को जानना और जितना मुमकिन हो सके उनके दुखों को कम करना। इस स्वभाव के कारण वह यह फैसला लेती हैं कि वह गाँव के बच्चों को पढ़ाएंगी। इसके लिए वह रविवार का अवकाश का दिन चुनती हैं और उस दिन सुबह से शाम तक गाँव में रहकर एक पेड़ के नीचे उन बच्चों को पढ़ाती हैं जो स्कूल नहीं जा पाते। स्कूल में वह बच्चों को सिर्फ अक्षर ज्ञान ही नहीं करातीं वरन उन्हें सामाजिक व्यवहार के तौर तरीके भी सिखाती हैं। लेकिन इस सिखाने की प्रक्रिया में उन्हें अपनी गलती का एहसास होता है तो उसे भी स्वीकार करने में संकोच नहीं करती। मसलन, जब बच्चों को सफाई के बारे में बताती हैं और उनको हिदायत देती हैं कि उन्हें नहा-धोकर साफ सुथरे कपड़े पहन के आना है तो उनके इस निर्देश से बच्चों पर क्या गुजरती है, इसका एहसास होने पर वह अपने बारे में टिप्पणी करती है, *"मुझे आज भी वह दिन नहीं भूलता जब मैंने बिना कपड़ों का प्रबंध किए हुए ही उन बेचारों को सफाई का महत्त्व समझाते-समझाते थका डालने की मूर्खता की।"*

महादेवी जी में बच्चों के प्रति गहरा ममत्व का भाव है जो बार-बार व्यक्त होता है। वह पाठशाला के बच्चों के लिए एक दिन पांच-छह सेर जलेबी ले आती हैं और उन्हें सभी के बीच भक्तिन की मदद से बांटती हैं। भक्तिन वैसे है तो महादेवी जी की नौकरानी लेकिन वह उनकी अभिभाविका की तरह पेश आती है। लेकिन कोई नौकरानी अभिभाविका की तरह तब ही व्यवहार करेगी जब मालकिन भी उसके साथ नौकर की तरह नहीं बल्कि घर के सदस्य की तरह व्यवहार करेगा। महादेवी वर्मा की यह टिप्पणी भक्तिन के प्रति उनके ममत्व भाव को बताता है, *"बेचारी मेरे साथ रहते-रहते दस लंबे वर्ष काट आई है, नौकरानी से अपने-आपको एक प्रकार की अभिभाविका मानने लगी आया"। है; परंतु मेरी सनक का दुष्परिणाम सहने के अतिरिक्त उसके क्या मिला है? सहसा ममता से मेरा मन भर आया"।*

इसी तरह जब महादेवी जी को मालूम पड़ता है कि घीसा बीमार हो गया है तो न सिर्फ उसकी दवाई का इंतजाम करती है उसे देखने उसके घर भी जाती है। गाँव वालों के विरोध के बावजूद घीसा को अपनी पाठशाला में पढ़ने की अनुमति देने में भी महादेवी जी के व्यवहार की दृढ़ता और साहस का परिचय मिलता है। घीसा और उसकी मां के बारे मे की जाने वाली बातों से विचलित हुए बिना वह न केवल घीसा को अपनी पाठशाला में पढ़ने की इजाजत देती है बल्कि उसके प्रति विशेष लगाव भी महसूस करने लगती है। घीसा और उसकी मां के बारे में कही जाने वाली बातों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए वे लिखती हैं, *"यह कथा अनेक क्षेपकोमय विस्तार के साथ सुनाई तो गई थी मेरा मन फेरने के लिए और मन फिरा भी, परंतु किसी सनातन नियम से कथावाचक की ओर न फिरकर कथा के नायकों की ओर फिर गया और इस प्रकार घीसा मेरे और अधिक निकट आ गया था।"* यही वजह है कि घीसा उनके हृदय के नजदीक आ गया और वह उसकी प्रत्येक गतिविधि और व्यवहार को ध्यान से देखने लगी और उसके सुख-दुख की चिंता भी करने लगी। लेखक का मुख्य काम लेखन ही है लेकिन महादेवी वर्मा सिर्फ लेखिका नहीं थी, उन्हें सामाजिक कार्यों में भी गहरी रुचि थी। यह रेखाचित्र इस बात का प्रमाण है कि उनकी रुचि ऐसे सामाजिक कार्यों में नहीं थी जिनसे प्रचार और प्रशंसा मिले बल्कि सचमुच लोगों के बीच जाकर उनके सुख-दुख से जुड़कर उनके लिए कुछ करने का प्रयत्न करना। उनकी यह छवि ही इस रेखाचित्र में हमारे सामने आती है।

cks/k iz'u

7. महादेवी वर्मा के पाठशाला खोलने के निर्णय से उनके व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषता व्यक्त होती है?

   .....

8. महादेवी वर्मा द्वारा गाँव में चलाई गई पाठशाला के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा तथ्य सही नहीं है?
   क) पाठशाला पेड़ के नीचे चलती थी।
   ख) पाठशाला सिर्फ रविवार को लगती थी।
   ग) बच्चों के बीच बांटने के लिए एकबार जलेबी लेकर आई थीं।
   घ) बच्चों से एक रुपया फीस लेती थीं। ( )

9. महादेवी वर्मा ने गाँव वालों के विरोध के बावजूद घीसा को पाठशाला में भर्ती क्यों किया?

   .....
   .....
   .....

37-9 lajpuk-f'kYi

महादेवी वर्मा का रेखाचित्र गद्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है जिसका हिंदी में सर्वाधिक रचनात्मक उपयोग महादेवी जी ने ही किया है। महादेवी वर्मा ने कई रेखाचित्र लिखे हैं ओर उनके लिखे रेखाचित्र काफी चर्चित भी रहे हैं। 'घीसा' उनके प्रख्यात रेखाचित्रों में से एक है। हम इस भाग के अंतर्गत रेखाचित्र की भाषा और शैली पर विचार करेंगे।

^?kh l k* dh Hkk"kk

'घीसा' की विशिष्टता उसकी भाषा और शैली में भी निहित है। मर्मस्पर्शी रेखाचित्र के लिए संवेदनशील भाषा का होना जरूरी है और 'घीसा' की भाषा भी वैसी ही है। हालांकि महादेवी की भाषा में तत्सम शब्दावली का ज्यादा प्रयोग होता है लेकिन आवश्यकता के अनुसार वह देशज और बोलचाल के शब्दों का भी प्रयोग करती हैं। उनकी भाषा मार्मिक प्रसंगों में ही नहीं वर्णनात्मक स्थलों पर भी काव्यात्मक भाषा की तरह सौंदर्यपरक होती है। रेखाचित्र की शुरुआत ही जिस तरह की भाषा से होती है उसमें निहित मार्मिकता पाठकों को सहज ही आकृष्ट कर लेती है। घीसा का स्मरण करते हुए वह अपनी बात कुछ-कुछ दार्शनिक शैली में लेकिन गहरे पीड़ा के साथ व्यक्त करती है और उस परिच्छेद के अंत तक आते-आते उनकी भाषा में काव्यात्मकता की विशेषताएं आने लगती हैं: *"वर्तमान की कौन-सी अज्ञात प्रेरणा हमारे अतीत की किसी भूली हुई कथा को संपूर्ण मार्मिकता के साथ दोहरा जाती है, यह जान लेना सहज*

होता तो मैं भी आज गाँव के उस मलिन सहमे नन्हे-से विद्यार्थी की सहसा याद आ जाने का कारण बता सकती, जो एक छोटी लहर के समान ही मेरे जीवन-तट को अपनी सारी आर्द्रता से छूकर अनन्त जलराशि में विलीन हो गया है।" यह भाषा छायावादी कवियों की तत्सम शब्दावली के अनुरूप है। महादेवी जी ने अपनी बात को अत्यंत संक्षेप में लेकिन प्रभावपूर्ण ढंग से कही है। घीसा को याद करते हुए उसके लिए जो विशेषण प्रयुक्त किये हैं उससे घीसा के व्यक्तित्व की सभी विशेषताएं एक साथ उजागर हो उठती हैः *"उस मलिन, सहमे, नन्हे से विद्यार्थी"।* उसकी याद करते हुए वह उसके जीवन के उस छोटे से हिस्से को जिन्हें महादेवी वर्मा ने नजदीक से देखा था और जो बाद में सदा के लिए विलीन हो गया था। उसको याद करते हुए वह समुद्र से उठने वाली उस लहर की उपमा देती है जो समुद्र से उठकर समुद्र में विलीन हो जाती है। कमोबेश भाषा का यही स्वरूप पूरे रेखाचित्र में दिखायी देता है। लेकिन जहां जरूरी होता है वहां महादेवी जी देशज और तद्भव शब्दों का भी प्रयोग करती हैंः *"दूर-पास बसे हुए गुड़ियों के बड़े-बड़े घरौंदों के समान लगने वाले कुछ लिपे-पुते, कुछ जीर्ण-शीर्ण घरों से स्त्रियों का झुण्ड पीतल-ताँबे के चमचमाते मिट्टी के नये लाल और पुराने भदरंग घड़े लेकर गंगाजल भरने आती है"*। इन पंक्तियों में भाषा का स्वरूप भिन्न है। बोलचाल में प्रयुक्त होने वाले शब्द जैसे गुड़िया, घरौंदा, झुंड, पीतल-तांबे, मिट्टी, भदरंग, घड़े जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है तो बीच में जीर्ण-शीर्ण जैसी तत्सम शब्दावली का भी। इसी तरह आगे पंक्तियों में देशज शब्दों का भी प्रयोग है, *"किसी की साँवली गोल कलाई पर शहर की कच्ची नगदार चूड़ियों के नग रह-रहकर हीरे-से चमक जाते हैं और किसी के दुर्बल काले पहुँचे पर लाख की पीली मैली चूड़ियाँ काले पत्थर पर मटमैले चन्दन की लकीरें जान पड़ती हैं। कोई अपने गिलट के कड़े-युक्त हाथ घड़े की ओट में छिपाने का प्रयत्न-सा करती रहती है और कोई चाँदी के पछेली–ककना की झनकार के साथ ही बात करती है। किसी के कान में लाख की पैसे वाली तरकी धोती से कभी-कभी झाँक भर लेती है और किसी की ढारें लंबी जंजीर से गला और गाल एक करती रहती है। किसी के गुदना गुदे गेहुँए पैरों में चाँदी के कड़े सुडौलता की परिधि से लगते हैं"*। इन पंक्तियों की भाषा में नगदार चूड़ियों, काले पहुँचे, गिलट के कड़े, चाँदी के पछेली-ककना, तरकी धोती, गुदना गुदे पैर, जैसे प्रयोग में लोक जीवन की पूरी झलक मिल जाती है। जहां आवश्यक हुआ है वहां उन्होंने गंगा किनारे बोली जाने वाली लोक भाषा (अवधी) का भी प्रयोग किया है। मसलन, घीसा की मां के एक कथन को उसी की भाषा में उद्धृत करती हैं, *"हम सिंघ के मेहरारु होइके का सियारन के जाब"* (मैं सिंह की पत्नी होकर सियार के साथ कैसे जा सकती हूँ)। यही भाषा बच्चों की आपसी बातचीत में उद्धृत हुई है, *"सार एक ठो पिलवा पाले है, ओही का देय बरे गा होई"* (एक पिल्ला पाल रखा है उसी को देने गया होगा)। इस लोकभाषा का प्रयोग करते हुए भी रेखाचित्र में जो भाषा का अपना मिज़ाज है वह कहीं भी न भंग होता है और न ही उसमें शिथिलता आती है।

^?kh lk* dh 'kyh

'घीसा' रेखाचित्र है और इकाई 33 में हमने रेखाचित्र की विधागत विशिष्टता पर विचार किया है। रेखाचित्र को परिभाषित करते हुए उस इकाई में कहा गया था, *"जब किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, घटना, दृश्य आदि का न्यूनतम शब्दों से इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि पाठक के मन पर उसका हू-ब-हू चित्र बन जाता है तो उसे रेखाचित्र कहते हैं।"* इस परिभाषा के अनुसार अगर हम 'घीसा' का मूल्यांकन करें तो हम पायेंगे कि इसमें भी घीसा नामक एक बालक का शब्दों के माध्यम से रेखाचित्र प्रस्तुत किया गया है। लेकिन घीसा का वैसा विस्तृत चित्रण नहीं है जो जीवनी में किया जाता है। उसके जीवन की संपूर्ण गाथा प्रस्तुत नहीं की गयी है। केवल उन प्रसंगों का उल्लेख किया गया है जिनका घीसा के पाठशाला में प्रवेश लेने और पढ़ने से जुड़े हैं। लेकिन इन प्रसंगों से ही घीसा के व्यक्तित्व के लगभग सभी पहलू उभर कर सामने आ जाते हैं।

रेखाचित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उस इकाई में कहा गया था, "रेखाचित्र की रचना कहानी की तरह होती है। लेकिन कहानी से भिन्न इस रूप में कि रेखाचित्र में लेखक स्वयं उपस्थित रहता है। कहानी की तरह रेखाचित्र काल्पनिक नहीं होता। उसके पात्र भी कभी न कभी लेखक के संपर्क में जरूर आये होते हैं। लेखक संस्मरण की तरह अपने पात्रों, स्थितियों और प्रसंगों का वर्णन करता है। वह स्वयं भले ही उसका पात्र न हो, लेकिन उसकी मौजूदगी रचना को प्रामाणिक और विश्वसनीय बनाती है। वह ऐसे जीवनचरित्रों को हमारे सामने लाता

है जो अपनी साधारणता में भी असाधारण होते हैं। उनके जीवन के मार्मिक प्रसंग, उनका दृढ़ चरित्र, कठिन और विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए भी आत्मबल बनाये रखना, उनकी करुणा और उनके हृदय का आंतरिक आलोक ही रेखाचित्र की शक्ति होते हैं।" रेखाचित्र की इन विशेषताओं के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि 'घीसा' की शैली रेखाचित्र के सर्वथा अनुरूप है। इस रेखाचित्र के केंद्र में घीसा है। लेकिन रचनाकार ने घीसा के व्यक्तित्व को शब्दबद्ध करने के लिए उसके परिवेश और परिस्थितियों का चित्रण भी साथ-साथ किया है। जहां आवश्यकता हुई है उससे संबद्ध उन पात्रों का भी चित्र प्रस्तुत किया है जो घीसा के व्यक्तित्व को उभारने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कोई न कोई भूमिका अवश्य निभाते हैं। मसलन, घीसा की मां, उसके साथ पाठशाला में पढ़ने वाले बच्चे और उसके आस-पड़ोस में रहने वाले लोग। लेकिन महादेवी वर्मा ने घीसा की मां को छोड़कर किसी भी अन्य पात्र को उतना ही महत्त्व दिया है जितना घीसा के व्यक्तित्व को उभारने के लिए आवश्यक है। घीसा की मां के जीवन के अवश्य कुछ प्रसंगों को महत्त्व के साथ चित्रित किया है क्योंकि उसका सीधा संबंध स्वयं घीसा के जीवन से है। 'घीसा' की रचना करते हुए महादेवी लेखकीय संयम बनाए रखती है। वह कहीं भी न तो भावनाओं के प्रवाह में अनावश्यक बहती है और न ही प्रसंगों, पात्रों और परिस्थितियों पर अनावश्यक टीका-टिप्पणी करती है। 'घीसा' को पढ़कर कोई भी महसूस कर सकता है कि महादेवी की घीसा के प्रति गहरी आत्मीयता का भाव है लेकिन यह आत्मीयता उनके रचनात्मक अभिव्यक्ति पर हावी नहीं होती।

37-10 ifrik|

'घीसा' एक रेखाचित्र है और गद्य की इस विधा को महादेवी वर्मा ने रचनात्मक उत्कर्षता के साथ प्रस्तुत किया है। इसे पढ़ते हुए पाठक रचनाकार की लेखकीय क्षमता से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। रेखाचित्र की भाषा-शैली पाठक को गहरे रूप में प्रभावित करती है। कोई भी साहित्यिक कृति सबसे पहले अपने रचनात्मक सौंदर्य से ही पाठकों को आकृष्ट करती है। लेकिन महादेवी वर्मा का लेखन गहरे मानवीय सरोकारों से जुड़ा है और इस बात को हम इस रचना में भी देख सकते हैं। महादेवी जी ने जितने भी रेखाचित्र लिखे हैं उनमें उन्होंने समाज के उत्पीड़ित और पददलित वर्ग के लोगों के जीवन यथार्थ को उनके प्रति गहरी संवेदना और सहानुभूति के साथ लिखा है। अत्यंत विपरीत परिस्थितियों के बीच भी वे किस तरह अपनी मानवीय संवेदना को बचाये रखते हैं उसे उन्होंने बहुत ही प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया है।

'घीसा' का घीसा भी एक ऐसा ही पात्र है। वह महज नौ साल का छोटा बालक है। गंगा किनारे के एक गाँव में अपनी मां के साथ रहता है। उसकी माँ विधवा है और कोरी जाति (एक पिछड़ी जाति) की है। घीसा की मां को अपना जीवनयापन करने के लिए मेहनत-मजूरी करनी पड़ती है। उसकी इच्छा है कि उसका बेटा भी पढ़-लिख जाए लेकिन गाँव में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। इसलिए जब महादेवी वर्मा प्रत्येक रविवार को गाँव के बच्चों को पेड़ के नीचे पढ़ाने का निश्चय करती है, तो घीसा की माँ अपने बेटे को लेकर महादेवी वर्मा के पास पहुंचती है। महादेवी वर्मा यहां घीसा के माँ-बाप के बारे में बताती है। कैसे दोनों की शादी हुई। कैसे घीसा के पिता का देहांत हुआ और बाद में घीसा की माँ को किस तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ा। महादेवी जी यह भी बताती है कि गाँव में घीसा का माँ का किस तरह विरोध किया जा रहा है। यह विरोध इस हद तक है कि घीसा को पाठशाला में पढ़ने से भी रोका जाता है। लेकिन महादेवी गाँव वालों की इच्छा के विरुद्ध जाकर घीसा को पाठशाला में पढ़ने की अनुमति देती है। यह उनकी उदारता और साहस का परिचायक भी है। पाठशाला में बच्चे घीसा से खींचे-खींचे रहते हैं। इसके बावजूद वह किसी के प्रति कटु नहीं है। पाठशाला में घीसा का विनम्र व्यवहार, पढ़ाई के प्रति उसकी लगन, गुरु जी के प्रति उसकी गहरी श्रद्धा महादेवी जी को उसकी तरफ आकृष्ट कर देती है। जब घीसा को अपनी बीमारी के दौरान मालूम पड़ता है कि शहर में दंगा हो गया है, तो वह महादेवी को शहर जाने से रोकने की हर मुमकिन कोशिश करता है। लेकिन जब उसे मालूम पड़ता है कि बहुत से बच्चे शहर में अपने माता-पिता से दूर गुरु जी के भरोसे है, तब वह उन्हें नहीं रोकता। यह घटना उसके व्यक्तित्व की दृढ़ता और साथ ही उसकी निःस्वार्थ भावना का परिचय देती है। जब महादेवी कुछ महीनों के लिए पाठशाला से अवकाश लेकर जाती है तब अपना नया कमीज देकर वह गुरु जी को भेंट देने के लिए तरबूज लेके आता है। उसकी इस त्याग भावना को जानकर महादेवी वर्मा

द्रवित हो जाती है। रेखाचित्र को पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि महादेवी जी न सिर्फ घीसा के जीवन की मुश्किलों के बारे में अपने पाठकों को बताना चाहती हैं वरन अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उसकी मानवीय सहृदयता और उसकी व्यवहारगत विनम्रता को भी रेखांकित करना चाहती है। लेकिन यही इस रेखाचित्र की रचना का प्रतिपाद्य नहीं है। रचना का उद्देश्य इससे बड़ा है। महादेवी यह भी बताना चाहती है कि किस तरह भारत के गाँव अब भी आधुनिक सुख-सुविधाओं से ही नहीं उन मूलभूत जरूरतों से भी वंचित है जिसे पाने का हक सभी को है। गाँवों में स्कूल नहीं है। गरीबों के लिए उपयुक्त घर नहीं है। उनके इलाज के लिए न डॉक्टर है और न ही अस्पताल। इसके अलावा गाँवों का सामाजिक पिछड़ापन भी उनकी जिंदगी की मुश्किलों को और बढ़ा देता है। महादेवी इस रेखाचित्र में किसी के प्रति कटु हुए बिना गरीब और दलित समाज के लोगों के जीवन की कठिनता विशेष रूप से अकेली स्त्री जिसका कोई सहारा न हो उसके लिए अपने बच्चों का पालन-पोषण करना कितना दुश्वार है, इसे रेखाचित्र में महादेवी पूरी संवेदनशीलता के साथ उभार पाती है। रेखाचित्र के अंतिम परिच्छेद में यह सूचना कि घीसा की मौत हो गयी है और उसका कारण उसका उपेक्षित जीवन है, यह बताने के लिए पर्याप्त है कि घीसा जैसे गरीब और दलित बच्चे किस तरह बेमौत मारे जाते हैं। इस प्रकार यह रेखाचित्र सिर्फ़ एक बालक घीसा के जीवन और व्यवहार के बारे में ही नहीं बताता बल्कि उन सामाजिक परिस्थितियों पर भी प्रकाश डालता है जिसके कारण घीसा जैसे बच्चों का जीवन न सिर्फ मुश्किलों से भर जाता है बल्कि उनके लिए जीवन एक अभिशाप बन जाता है और मृत्यु ही उन्हें इस अभिशाप से मुक्त कर पाती है।

Ckk/k iz'u

10. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता 'घीसा' की भाषा पर लागू नहीं होती?
    क) उर्दूनिष्ठ भाषा
    ख) तत्सम शब्दावली
    ग) देशज शब्दों का प्रयोग
    घ) काव्यात्मक भाषा ( )
11. 'घीसा' को किन कारणों से कहानी नहीं माना जा सकता?

    .....
    .....
    .....
    .....

12. निम्नलिखित में से कौन-सा तथ्य घीसा की मां पर लागू नहीं होता?
    क) विधवा थी
    ख) मेहनत-मजूरी करती थी
    ग) घीसा को शिक्षित बनाना चाहती थी
    घ) घीसा को बोझ समझती थी ( )

vH;kl

3. 'घीसा' रेखाचित्र के माध्यम से महादेवी वर्मा क्या कहना चाहती है?

   .....
   .....
   .....

4. 'घीसा' के आधार पर घीसा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

   .....
   .....
   .....

5. 'घीसा' की भाषा और शैलीगत विशेषताएं बताइए।

   .....
   .....
   .....

37-11 lkjka'k

हिंदी गद्य के इस पाठ्यक्रम के छठे खंड की इस इकाई में आपने महादेवी वर्मा रचित 'घीसा' नामक रेखाचित्र का अध्ययन किया है। इस इकाई में आपने रेखाचित्र के अंतर्वस्तु की विशेषताओं का भी अध्ययन किया है। आपने इकाई में पढ़ा है कि 'घीसा' रेखाचित्र में एक बालक घीसा किस तरह अपनी पढ़ने की लगन, विनम्र और दृढ़ व्यवहार और गुरुजी के प्रति अपने भक्तिभाव को कैसे प्रकट करता है। आपने यह भी पढ़ा है कि किस तरह घीसा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रयत्न करता है। इस इकाई को पढ़ने से आप इस रेखाचित्र की अंतर्वस्तु की विशेषताएं बता सकेंगे।

इस इकाई में घीसा के चरित्र की विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला गया है। घीसा विनम्र, मेहनती, लगनशील और त्याग भावना से परिपूर्ण है। इस इकाई को पढ़ने के बाद घीसा के चरित्र की विशेषताओं का आकलन भी आप कर सकेंगे।

इस इकाई में रेखाचित्र में वर्णित परिवेश और लेखकीय व्यक्तित्व के प्रभाव का भी विवेचन किया गया है। साथ ही रेखाचित्र की भाषा और शैलीगत विशेषताओं से भी आपका परिचय कराया गया है। इकाई के अंत में रेखाचित्र के उद्देश्य पर भी प्रकाश डाला गया है। इकाई को पढ़ने के बाद आप इन सभी पक्षों का विवेचन स्वयं कर सकेंगे।

37-12 'kCnkoyh

efyu % मैला
thou-rV % जीवन रूपी किनारा
vkn!rk % करुणा से युक्त
tyjkf'k % जल का भंडार
{kr-fo{kr % बहुत जगह कटी-फटी, बहुत अधिक घायल
HkkxhjFkh % गंगा
?kjkSnk % खेलने के लिए बच्चों का बनाया हुआ मिट्टी का छोटा-सा घट
th.kZ-'kh.kZ % फटा-पुराना
HkmnZx % भद्दा
v}Sr % द्वैत का अभाव, जो केवल एक हो
igqph % हाथ में पहनने की स्त्रियों का गहना
fxyV % सोने का पानी चढ़ाकर बनाया गया चमकीला धातु
iNsyh-ddu % हाथों में पहनने का गहना
jkxk % एक प्रसिद्ध धातु
bMqjh % सिर पर रखा गोल रिंग जिस पर स्त्रियां घड़ा रखती हैं
ydqVh % छोटी-पतली लकड़ी
xMfj;k % भेड़-बकरी चराने वाला
dk;Zdkfj.kh % किसी संस्था को चलाने के लिए बनायी गई समिति
inkf/kdkjh % अधिकार युक्त पद पर आसीन व्यक्ति
ftKklq % जानने की इच्छा रखने वाला
fu"iHk % जिसमें चमक न हो
xks/kwyh % संध्या का समय
nqdwy % रेश्मी वस्त्र
vatu % काजल
vfHkHkkfodk % किसी अवयस्क (बालक) का संरक्षक
lyqdkjfgr % बिना कुरती के
>qViqV % सवेरे या शाम का वह समय जब साफ-साफ दिखाई न दे
Mfy;k % बाँस आदि का बना एक छोटा पात्र
vlfg".kqrk % सहनशीलता का अभाव, झगड़ालुपन
izR;qr % बल्कि, इसके विपरीत

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

rhr % तीखा
egjk: % औरत, पत्नी
{kksHk % व्याकुलता
{ksidk e; % बाद में मिलाया हुआ
vi okn % बदनामी
ekfuuh % अभिमान करने वाला
vkofÙk % दुहराना
'khryikVh % एक प्रकार की पतली और चिकनी चटाई
dksVj % पेड़ के तने का खोखला भाग
vfLFki atj % हड्डियों का ढाँचा
nks.kkpk;Z % पांडवों और कौरवों के गुरु जिन्होंने उन्हें धनुष विद्या सिखाई
Hkhy f'k"; % एकलव्य
oeuL; % मनमुटाव, वैर
lfUuikrxzLr % वात, पित्त और कफ़ का एक साथ प्रकोष से बीमार पड़ा
okr-xzLr % वायु से होने वाले रोग
vkth % दादी
grkgr % मारे गये और घायल हुए
dadky'ks"kh % जो हड्डियों का ढांचा भर रह गया हो
rikorh % तपस्या संबंधी व्रत करने वाला
vukxfjd % जो नागरिक न हो, बेघरबार
czgepkjh % ब्रह्मचर्य (अविवाहित रहना) का पालन करने वाला
fVifd;k¡ % बहुत छोटे-छोटे टुकड़े
mPNokl % साँस भरना
dNkj % नदी के किनारे की गीली ज़मीन
i.kZdqVh % पत्तों की बनी झोंपड़ी
vkfne % आदि (आरंभ) में उत्पन्न; अत्यंत पुराना
bZ'kr~-y{; % कुछ-कुछ दिखाई देने वाली
izxYHk % प्रतिभावान
Hkkokfrjsd % भावों की अधिकता
nf{k.kk % दान
nk'kZfud % दर्शनशास्त्र का जानकार

37-13 cks/k iz'uksa@vH;klksa ds mÙkj

Ckks/k iz'u

1. घ) 2. क)
3. क्योंकि गाँव वालों की नज़र में घीसा की माँ सद्चरित्र नहीं थी और वह घमंडी भी थी।
4. घीसा ने महादेवी वर्मा को तरबूज भेंट में दिया था।
5. ग)
6. दृढ़ता और गुरु जी के प्रति श्रद्धाभाव
7. गरीब और असहाय बच्चों को शिक्षित करने की सामाजिक दायित्व की भावना से प्रेरित होकर
8. घ)
9. महादेवी वर्मा घीसा की माँ के बारे में फैले अपवाद से सहमत नहीं थीं और उनकी दृष्टि में पाठशाला में पढ़ने का अधिकार सबको था।
10. क)
11. कहानी काल्पनिक पात्रों और प्रसंगों पर आधारित होती है जबकि रेखाचित्र वास्तविक पात्रों और प्रसंगों के आधार पर लिखा जाता है।
12. घ)

vH;kl के उत्तर इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़कर स्वयं अपने शब्दों में लिखिए।